ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

मार्गशीर्ष-पौष संवत् नानकशाही ५५४ दिसंबर 2022 वर्ष १६ अंक ४

प्रकाश-स्थान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी,
तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब (बिहार)

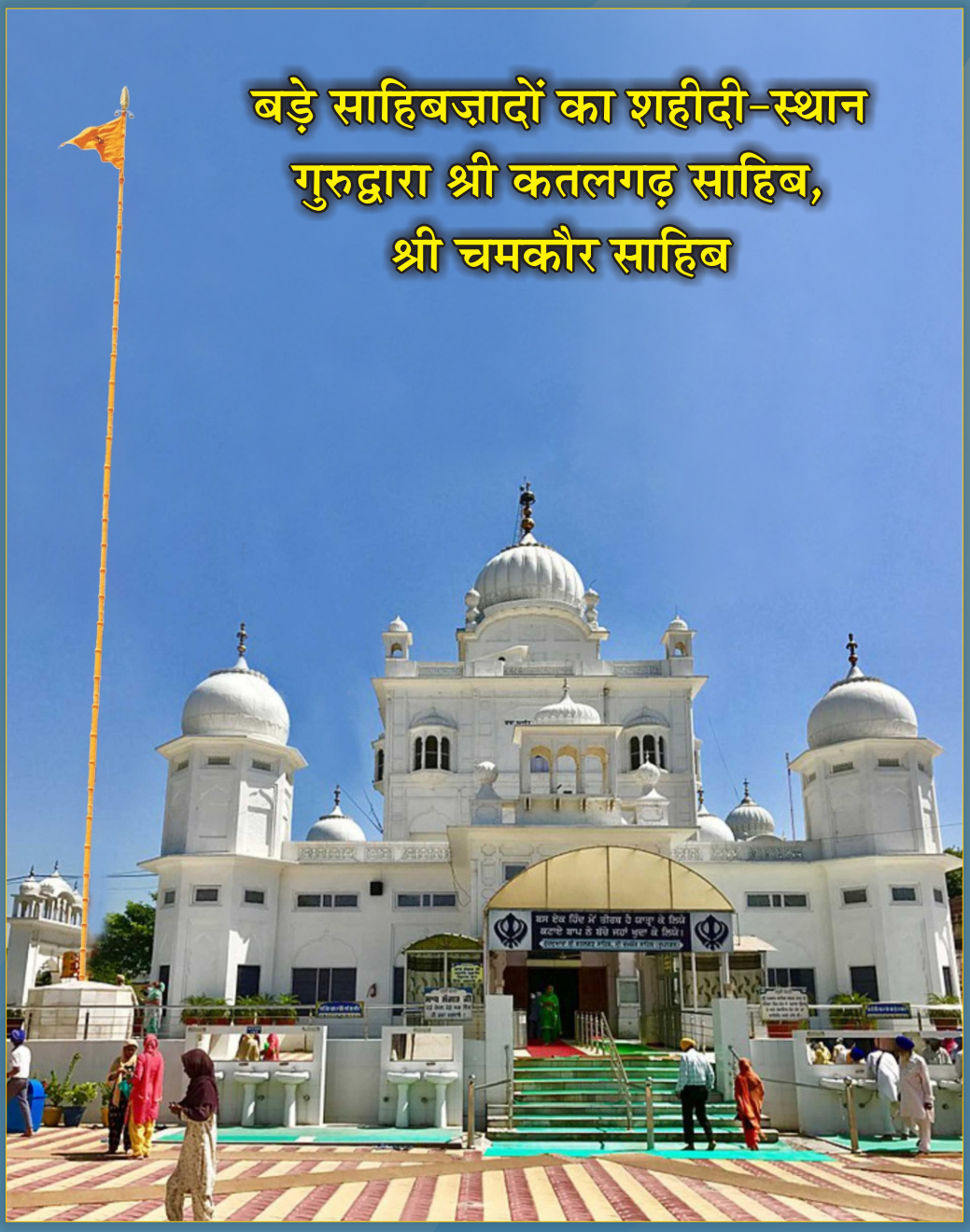

बड़े साहिबज़ादों का शहीदी-स्थान
गुरुद्वारा श्री कतलगढ़ साहिब,
श्री चमकौर साहिब

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

मार्गशीर्ष–पौष, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 16 अंक 4 दिसंबर 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
हम इह काज जगत मो आए 7
–डॉ. परमजीत कौर
भक्त सैण जी की प्रेमा–भक्ति 12
–डॉ. मनजीत कौर
बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी. . . 17
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
साहिब के साहिबज़ादे 26
–भाई निशान सिंघ गंडीविंड
महान शहीद बड़े साहिबजादे 37
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
अमर शहीद भाई जीवन सिंघ जी 39
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
शहीद भाई संगत सिंघ जी 42
– जनाब बशीर मुहम्मद
दशमेश पिता के दुलारे (कविता) 46
–डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक
खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११ ॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज माझ राग में 'बारह माहा' बाणी की इस पउड़ी में पौष मास की ऋतु की पृष्ठभूमि में दांपत्य जीवन के संकेतों के प्रसंग में जीव-स्त्री को परमात्मा-पति की खुशियां प्राप्त करने वाला गुरमति मार्ग दर्शाते हैं।

गुरु जी का कथन है कि पौष माह के अत्यंत कठोर एवं निष्ठुर शीत के महीने में जीव-स्त्री को शीत के कारण वनस्पति पर एकत्रित हुआ जल कुछ नहीं कहता अर्थात् वह जीव-स्त्री सांसारिकता और इसमें विद्यमान विषय-विकारों के पाले से बची रहती है, जैसे उसका प्रभु-पति उसके गले मिला हुआ है अर्थात् जिसने अपने हृदय में उसकी पावन स्मृति को सकुशल संभाल कर रखा है। ऐसी जीव-स्त्री का मन मालिक के चरण-कमलों के साथ बंधा हुआ होता है और उसका एक-एक श्वास प्रभु-पति के दीदार की तीव्र इच्छा में ही व्यतीत होता है। उस जीव-स्त्री को निर्धनों को पालने वाले मालिक की सेवा का ही सहारा एवं लाभ होता है। प्रभु-पति की सेवा में लगी हुई जीव-स्त्री को विषय-विकार दुखित नहीं करते, क्योंकि वह तो अपना मनुष्य-जन्म रूपी अवसर अच्छे संगियों के साथ मालिक के गुण गायन करने में ही सफल करती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि पौष के महीने में जीव-स्त्री अपने शरीर के रूपाकार के मूल स्रोत प्रभु से सच्चा प्यार कर एकमन-एकचित्त हो जाती है। अध्यात्म के स्रोत प्रभु ने ऐसी नेक जीव-स्त्री का हाथ इस प्रकार पकड़ा होता है कि वह उससे पुनः बिछड़े ही न। ऐसे परमात्मा से तो मैं लाख बार कुर्बान चली जाऊं! सतिगुरु जी कहते हैं कि जीव-स्त्री अपने मालिक के द्वार पर आ जाती है अथवा सभी सांसारिक सहारों को भुला कर मात्र प्रभु का ही सहारा चाहने लगती है। परमात्मा ऐसी दया-दृष्टि वाला है कि उसको उसकी इज्जत रखनी ही होती है। परमात्मा बेपरवाह भी है। वह पौष महीने में जिस जीव-स्त्री पर बख्शिश करता है उसका यह महीना सुहावना हो जाता है और यहां-वहां के सभी सुख उसको मिल जाते हैं।

संपादकीय

आओ! शहीदों की विरासत को संभालें!

सिक्खी के महल को मज़बूत बनाने के लिए दुधमुँहे बच्चों से लेकर वयोवृद्धों तक ने इसकी बुनियाद को शहादत के रक्त से सींचा है। अकाल पुरख की कृपा सदका ऐसे असंख्य शहादतों में एक भी ऐसा नहीं, जो अपने धर्म-पथ से डगमगा गया हो। सिक्ख शहीदी तवारीख में पौष माह की शहीदी-दासतान तो रौंगटे खड़े कर देने वाली है। श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ देने के बाद दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दोनों बड़े साहिबज़ादे तथा बहुत-से आस्थावान सिक्ख चमकौर की जंग में जूझते हुए शहादत प्राप्त कर गए। सरहिंद में दोनों छोटे साहिबज़ादों को दीवारों में ज़िंदा चिनकर शहीद कर दिया गया और माता गुजरी जी ठंडे बुर्ज में शहादत पा गए।

छोटे साहिबज़ादों की शहादत के बारे में बात करें तो उम्र के तकाज़े से यह शहादत बा-कमाल एवं बेमिसाल है। छोटी-सी उम्र हो और आगे से शत्रु-दल की शस्त्रबद्ध शाही फौज, भांति-भांति के लालच, भहकावे आदि देकर थक जाए, किंतु हौसले फिर भी बुलंद रहें, ऐसे साहस के पीछे खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति, माता जीतो जी तथा दादी माता गुजरी जी की शिक्षा व दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की *''सीसु दीआ पर सिररु न दीआ''* वाली प्रेरणा काम कर रही थी।

गुरु जी के चारों साहिबज़ादों ने यह साबित कर दिखाया कि ज़िंदगी में बड़े कीर्तिमान स्थापित करने के लिए लंबी आयु की नहीं, बल्कि जज़्बे एवं दृढ़ इरादे की आवश्यकता होती है। गुरु जी के चारों साहिबज़ादों ने ज़ब्र-जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध सत्य-धर्म की आवाज़ बुलंद करते हुए ज़ालिमों के आगे झुकने की बजाय अपनी जान न्यौछावर करने वाले मार्ग को चुना, इसी लिए आज समूचा सिक्ख जगत चार साहिबज़ादों को 'बाबा' लकब से पुकारता है।

साहिबज़ादों की इस लासानी शहादत के जज्बे को पारिवारिक पृष्ठभूमि में तलाशने का प्रयत्न करें तो सबसे पहले शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी ने कठोर यातनाएं सहन करने हुए जब्र का मुकाबला सब्र के साथ करना सिखाया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत दुनिया के इतिहास में मात्र एक ऐसी लासानी शहादत है जो दूसरे के धर्म की रक्षार्थ प्रवान चढ़ी।

समूचे सिक्ख संघर्ष के संदर्भ में इन शहादतों के उद्देश्य के बारे में विचार करें तो मुख्य रूप से ये पहलू सामने आते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म के अनुसार अपने धार्मिक संस्कार करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो, किसी पर ज़बरन अपना धर्म न थोपा जाए, अपने सभ्याचार के अनुसार पहरावा पहनने तथा अपनी बोली बोलने की पूर्ण आज़ादी हो, देश के आर्थिक साधन योग्यता के अनुसार सबके लिए बराबर हों, किसी गरीब का हक न मारा जाए, प्रत्येक कार्य न्याय की कसौटी पर परख कर किया जाए आदि। इन सब बातों को व्यवहारिक रूप में लाने के लिए गुरु साहिबान ने गुरबाणी द्वारा

प्रचार किया। जब-जब इन सिद्धांतों, मानवाधिकारों को रौंदा गया, तब-तब ज़रूरत पड़ने पर शस्त्रबद्ध संघर्ष भी करना पड़ा। इस संघर्ष में गुरु साहिबान, गुरु-परिवार, बच्चों, बुजुर्गों, नौजवानों के रूप में असंख्य सिक्खों ने शहादत दी। हक-सच के लिए जूझते हुए दी गई कुर्बानियों वाले रक्त-रंजित ऐतिहासिक पृष्ठों को पढ़ प्रत्येक गुरसिक्ख को अपने पूर्वजों पर फख्र महसूस होता है। वास्तविक रूप में यह तभी समझा जा सकता है यदि इन शहादतों के उद्देश्य को आज हम अपने व्यवहारिक जीवन में दृढ़ कर सकें। आज पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव तले सिक्ख परिवारों में बहुत-सी ऐसी अलामतें घर कर चुकी हैं, जिनके कारण हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि हम वास्तव में उपरोक्त शहीदों के वारिस हैं! इन सब में से सिक्ख परिवारों में फैला पतितपन का रोग सबसे बड़ी अलामत समझा जा सकता है। हमारी खातिर साहिबज़ादों ने शहादत के समय फख्र के साथ ऐसे ही शब्द कहे होंगे :

हम जान दे के औरों की, जानें बचा चले।
सिक्खी की नींव हम हैं, सरों पर उठा चले।...
सिंघों की सल्तनत का है, पौधा लगा चले।१०९। *(शहीदानि-वफा)*

हम साहिबज़ादों के वारिस हों और हमारे सिर पर केशों को कत्ल करती हुई कैंची चले, यह बात हरगिज़ शोभा नहीं देती।

हम उस दादी मां, माता गुजरी जी के वारिस हैं, जो साहिबज़ादों को शहादत हेतु भेजने से पहले कहती थीं :

जाने से पहले आओ, गले से लगा तो लूं!
केसों को कंघी कर दूं, ज़रा मुंह धुला तो लूं!
प्यारे सरों पे नन्हीं-सी, कलगी सजा तो लूं!
मरने से पहले तुमको, दूल्हा बना तो लूं!७२। *(शहीदानि-वफा)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पंथ की खातिर चारों साहिबज़ादे कुर्बान करने के बाद श्री दमदमा साहिब की पावन धरती पर खालसा पंथ की तरफ हाथ करते हुए कहा :

इन पुतरन के सीस पर, वार दीए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ, जीवत कई हज़ार।

हमारे परिवारों में फैले पतितपन के लिए हमारे माता-पिता भी बराबर के जिम्मेदार हैं। उन्हें अपने बच्चों के केश कत्ल करवाने से पूर्व धर्म-पथ पर अविचल खड़े श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लाल नज़र आने चाहिए।

आज आधुनिक युग में हमें ज़रूरत है कि हम खुद गुरमति सिद्धांतों के धारक बनकर अपने बच्चों को अपनी लासानी विरासत से परिचित करवाएं! सिक्ख रहित मर्यादा के धारक बनकर हकीकतन अपने शहीदों के वारिस कहलाने के हकदार बनें!!

हम इह काज जगत मो आए

*-डॉ. परमजीत कौर**

मुगलों के शासन-काल में कई बार ऐसा समय आया जब अत्याचार का बोलबाला होने के कारण धर्म का आधार डगमगा रहा था। स्वाभिमान के साथ ज़िंदगी बिताना, घुड़सवारी करना, दो-मंजिला मकान बनाना, सुंदर वस्त्र धारण करना, अच्छा भोजन खाना, पालकी में बैठना, अपने नाम के साथ सम्मानसूचक शब्द लगाना गैर-मुसलमानों के अधिकार में न रहा। ऐसे समय लोगों को मुगलों के अत्याचार से मुक्त करवाने के लिए, समाज को सन्मार्ग दृढ़ करवाने के लिए, सदियों से दबे-कुचले लोगों को सिर ऊँचा कर जीने का ढंग सिखाकर उन्हें खुली हवा में सांस लेने का अधिकार दिलवाने के लिए, नौ वर्ष की छोटी आयु में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहादत के लिए भेजने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आगमन पटना साहिब में सन् १६६६ ई. में हुआ। आप जी के जन्म के समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब बंगाल के ढाका शहर में थे। १६७० ई. में श्री गुरु तेग बहादर साहिब का मिलाप अपने साहिबजादे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन के पहले पाँच वर्ष पटना साहिब में व्यतीत किये। पटना साहिब में बहुत सारे हिंदू तथा मुसलमान आप जी के श्रद्धालु बन गए। पंडित शिवदत्त ने जब गुरु जी के दर्शन किये, उनको अन्य इष्ट-प्रेम भूल गया। राजा फतह चन्द तथा उसकी रानी ने अपना पुत्र-प्रेम न्योछावर कर दिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का सारा परिवार मार्च, १६७१ ई. में पटना साहिब से श्री अनंदपुर साहिब के लिए रवाना हुआ तथा दानापुर, बनारस, इलाहाबाद, अयोध्या, मथुरा, नानकमता साहिब, लखनौर तथा अंबाला होता हुआ श्री अनंदपुर साहिब पहुंचा। उस समय गुरु साहिब की आयु ६ वर्ष हो चुकी थी।

इस दौरान तीन वर्ष का समय बीत जाने के बाद एक दिन कश्मीरी पंडित श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समक्ष औरंगजेब के अत्याचार के विरुद्ध फरियाद लेकर पहुंचे तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाल्य-काल में ही अपनी आत्मिक उच्चता का प्रमाण देते हुए सहमी हुई जनता को निडर बनाने हेतु अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद होने के लिए भेज दिया। जब औरंगजेब की आज्ञा से श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद किया गया उस समय आपकी आयु ९ वर्ष के करीब थी। सिक्ख धर्म का पूरा उत्तरदायित्व आपके ऊपर आ गया।

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)-१३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

दिल्ली से आई संगत से यह जानकर कि गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद किये जाने पर दिल्ली के लोग इतने डर गए थे कि किसी ने गुरु जी के पवित्र शीश तथा धड़ को संभालने का साहस नहीं किया। एक सिक्ख भाई जैता जी शीश को श्री अनंदपुर साहिब लाए तथा अन्य सिक्ख भाई लक्खी शाह वणजारा ने धड़ का दाह-संस्कार करने का हौसला दिखाया। यही नहीं, मुगल हाकिमों के सामने गुरु साहिब के निकटवर्ती सिक्खों को छोड़कर अन्य सबने अपनी पहचान छिपा ली। यह सुनकर दशम गुरु जी ने सिक्खों को एक ऐसी शक्ल, ऐसा रूप तथा बाणा (वेशभूषा) देने का प्रण किया, जिससे सिक्ख लाखों में खड़ा अलग से पहचाना जाए।

अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शस्त्र-विद्या तथा घुड़सवारी की तरफ सिक्ख नौजवानों की रुचि बढ़ानी प्रारम्भ की। अनेक नौजवान श्री अनंदपुर साहिब में एकत्र होना शुरू हो गए। दसवंध (आय का दसवां भाग) की मर्यादा श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रारंभ की थी। काबुल, कंधार आदि दूर-दूर से सिक्ख दसवंध खर्च करके अच्छे घोड़े तथा शस्त्र गुरु जी के पास भेंट के रूप में लाने लगे।

राजा राम सिंह की तरफ से घोड़ों तथा राजा रत्न राय की तरफ से प्रसादी हाथी की भेंट का उल्लेख प्रसिद्ध है।

सन् १६८४ ई. में गुरु जी सभी कवि-जन तथा पांच सौ के करीब शस्त्रधारी नौजवान सिंघों को लेकर श्री अनंदपुर साहिब से चल पड़े। कुछ समय नाहन ठहरने के बाद सन् १६८५ ई. में यमुना नदी के किनारे सिक्ख धर्म का नया प्रचार-केंद्र श्री पाउंटा साहिब बसाया गया।

१६७९ ई. में औरंगजेब द्वारा गैर-मुसलमानों पर जजिया (कर) लगाया गया तथा १६८८ ई. में गैर-मुसलमानों के धार्मिक आयोजन (मेले आदि) बंद कर दिए गए। औरंगजेब के इस आदेश से हजारों-लाखों गैर-मुसलमानों का कारोबार ठप्प हो गया। १६९५ ई. में हुक्म किया गया कि राजपूतों के बिना अन्य कोई गैर-मुसलमान हाथी, घोड़े तथा पालकी की सवारी न करे, शस्त्र धारण न करे। औरंगजेब को प्रसन्न करने के लिए पहाड़ी राजाओं द्वारा गुरु साहिब पर आक्रमण करने के कारण भंगाणी का युद्ध हुआ, जिसमें सारे पहाड़ी हिंदू राजाओं की फौज उन साधारण लोगों से हार गयी, जिन्हें वे दबाते-कुचलते आ रहे थे। मुगलों के साथ-साथ तथाकथित उच्च जाति के हिंदू ब्राह्मण, क्षत्रिय भी आप जी के विरोधी हो गए तथा मुगल ताकत के साथ मिल गए। वे यह सोचने लगे कि सिक्खी के फलने-फूलने से उनके अधिकार समाप्त हो जाएंगे।

गुरु जी ने उनके अत्याचार को सदैव के लिए जड़ से समाप्त करने का प्रण कर लिया। अपने इस मनोरथ की पूर्ति के लिए गुरु जी ने एक ऐसी कौम तैयार करने का फैसला किया, जिसके मन में प्रभु-प्रेम, गरीब व निराश्रयों के लिए दया की भावना तथा हाथों में जुल्म व अत्याचार का

मुकाबला करने हेतु हथियार हों; जो जुल्म को समाप्त करने के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने की हिम्मत रखती हो।

१६९९ ई. में 'अमृत' की अद्वितीय दाति से अनुग्रहीत करके खालसा पंथ की साजना की। यह मानवता के इतिहास में एक नए (नवीन) क्रान्तिकारी युग का आरंभ था। 'अमृत' की दात ने सिक्खों के अन्दर गैरत, स्वाभिमान तथा विनम्रता की भावना पैदा करके उनका कायाकल्प कर दिया।

गुरु साहिब ने पांच प्यारों से 'अमृत' की दाति लेकर खालसे के साथ अपनी अभेदता प्रकत की। संसार के किसी धर्म में किसी गुरु, पैगम्बर, पीर आदि ने अपने शिष्य या मुरीद के साथ अभेदता प्रकट नहीं की। गुरु जी ने किसी भी युद्ध में कभी भी पहले आक्रमण नहीं किया। आप जी कोई अलग राज्य स्थापित नहीं करना चाहते थे और न ही किसी जायदाद आदि पर कब्जा कर रहे थे। यही कारण था कि मुगल फौज के कई जरनैल भी गुरु साहिब से प्रभावित होकर विरोध करना छोड़ देते थे। सैद बेग ने चमकौर साहिब के युद्ध में मुगल फौज का साथ छोड़ा तथा सैद खान श्री अनंदपुर साहिब की तीसरी लड़ाई में गुरु जी की निरवैरता देखकर मुगल फौज का साथ छोड़कर चला गया।

श्री अनंदपुर साहिब की लड़ाइयों के बाद गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब छोड़ना पड़ा। सरसा नदी को पार करते समय गुरु जी का परिवार आपस में बिछड़ गया।

गुरु जी ने भारतीय जनता के लिए अपने जिगर के टुकड़े कुर्बान कर दिए। चमकौर की गढ़ी में बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी शहीद हो गये। सरहिंद के सूबेदार वजीर खान की कचहरी में छोटे साहिबजादों को जीवित ही दीवारों में चिनवा दिया गया।

साहिबजादे धर्म की खातिर चढ़दी कला में रहते हुए शहीद हो गए। साहिबजादों की शहादत के बाद सिक्खों के मन में शासक वर्ग के प्रति आक्रोश तथा नफरत की आग भड़कनी स्वाभाविक थी। गुरु जी ने धैर्य के साथ सिक्ख धर्म को मजबूत करने तथा उचित समय का इन्तजार करने के लिए समझाया।

औरंगजेब को 'ज़फ़रनामा' लिखकर भाई दया सिंघ जी के हाथ भेज दिया, जिसमें उसको यह एहसास करवाया कि किसी राजा के लिए प्रजा उसका परिवार होती है। जब राजा अत्याचारी बन जाए तो प्रजा बगावत का बिगुल बजा कर राजा का सर्वनाश कर सकती है।

गुरु जी ने उसको ताड़ना करते हुए कहा कि क्या हुआ यदि मेरे चार पुत्र शहीद हो गये हैं, कुण्डली वाला नाग रूप खालसा पंथ चढ़दी कला में है। कलगीधर पातशाह के 'जफरनामे' का औरंगजेब पर ऐसा असर हुआ कि वह उसे पाकर बीमार पड़ गया तथा सन् १७०७ ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय के हालात को देखते हुए गुरु साहिब ने सिक्खों का नेतृत्व करने के लिए अद्वितीय ढंग से एक बहादुर सेनानायक का चयन किया।

गुरु साहिब ने करामातों के चक्कर में फंसे, अहंकार के मद में मस्त, अपनी असीम शारीरिक शक्ति का दुरुपयोग कर रहे माधोदास को अपने रुहानी विचारों से प्रेरित कर कल्याणकारी मार्ग दिखाया तथा उसकी शक्तियों को सही दिशा दी। गुरु साहिब के आलौकिक तथा अद्वितीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मन्त्रमुग्ध हुए माधोदास को अमृत-पान कराकर, 'गुरबखश सिंघ' नामकरण किया, जो 'बाबा बंदा सिंघ बहादुर' नाम से विख्यात हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने चपड़चिड़ी के युद्ध में खालसा सेना का नेतृत्व करते हुए वजीर खान को मौत के घाट उतार दिया, सिक्ख राज्य की बुनियाद रखी तथा श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्का जारी किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्ख त्यौहारों को नया रूप दिया। होली के स्थान पर होला-महल्ला पर्व मनाना प्रारंभ किया, जिसमें शस्त्र-विद्या के अभ्यास तथा मुकाबले करवाये जाते थे।

गुरु जी ने अपनी बाणी में पाखण्डों तथा कर्मकाण्डों का विशेष रूप से खंडन किया है। आप जी ने सिक्खों को एक अकाल पुरख की आराधना करने की ताकीद की है :

भजो हरी ॥ थपो हरी ॥
तपो हरी ॥ जपो हरी ॥१२ ॥६२ ॥

(अकाल उसतत)

गुरु जी ने समझाया कि प्रभु का निवास किसी विशेष स्थान पर नहीं है। वह तो प्रत्येक स्थान पर है, सर्वव्यापक है। यह सारा संसार व्यर्थ की क्रियाओं में उलझा हुआ है। कोई पत्थरों की पूजा कर रहा है, कोई बुतों को परमात्मा समझ कर पूज रहा है, कोई कब्रों के पीछे भटक रहा है :

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर
काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि
काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु
कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ॥
कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग
स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥ १० ॥३० ॥

(अकाल उसतत)

गुरु जी ने ताकीद की है कि जब तक गुरु का सिक्ख पाखण्ड से रहित है, विप्रों वाली रीतियों-कुरीतियों से बचा हुआ है, तब तक वह सिक्ख है, मेरा खालसा है :

जब लग खालसा रहै निआरा।
तब लग तेज दीओ मै सारा।
जब इह गहै बिपरन की रीत।
मै न करों इन की प्रतीति ॥ (सरबलोह ग्रंथ)

गुरु जी ने हीन-भावना से ग्रस्त लोगों को जागृत किया। उनको सचेत किया तथा समझाया कि सबकी एक ही जाति है— मानवता। सबका रंग, वेश तथा बोली अलग-अलग हो सकती है, लेकिन सबका रूप एक है। एक जैसी आंखें हैं, कान हैं तथा एक जैसा शरीर है। सबके अन्दर एक परमात्मा की ज्योति है, प्रकाश है। फिर भिन्न-भेद कैसा?

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥. . .
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ
है ॥१६ ॥८६ ॥ (अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लोगों को मानसिक गुलामी से आजाद कराया तथा हमेशा चढ़दी कला में रहना सिखाया। प्रसिद्ध विद्वान गारडन लिखता है कि ''जनता के मुर्दा ढांचे में जीवन की नई लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपदेशों ने डाली। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में धार्मिक नेता, शहंशाह, बलवान योद्धा तथा उच्च नीतिवान वाले सारे गुण मौजूद थे।'' *(वृत्तांत- श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कृत प्रो. साहिब सिंघ)*

१७०८ ई. में गुरु साहिब जी ने नांदेड़ की धरती पर रहने का निर्णय लिया। बादशाह बहादुर शाह के साथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मित्रता के कारण वजीर खान बहुत परेशान हो गया तथा साजिश रच कर गुरु जी पर आक्रमण करवा दिया। पठानों ने दीवान में कई दिन उपस्थित रहकर सिंघों पर विश्वास बना लिया तथा एक दिन जब गुरु जी अपने खेमे में विश्राम कर रहे थे, एक पठान ने गुरु जी की कमर में छुरे से वार कर दिया। इससे पहले कि वह दूसरा वार करता, गुरु जी ने उसको वहीं समाप्त कर दिया।

एक जर्रा ने जख्म साफ करके टांके लगा दिए। कुछ दिनों में जख्म भर गया तथा गुरु जी ने संगत में आकर दर्शन देने प्रारंभ कर दिए। जख्म अंदर से पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था कि एक दिन कमान पर डोरी कसते वक्त जख्म फिर से खुल गया और रक्त-स्राव होने लगा।

पंचतत्व में विलीन होने से पूर्व १७०८ ई. में गुरु के सिक्खों को देहधारी गुरु प्रंपरा खत्म करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'युगो-युग अटल गुरु' की पदवी प्रदान की।

यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों पर बहुत बड़ा उपकार किया है। यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु मानने का आदेश देकर सिक्ख पंथ का कल्याण न किया होता तो आज असीम संख्या में अपनी पूजा करवा रहे देहधारी गुरुओं के पाखण्ड के चक्रव्यूह में फंसा हुआ सिक्ख जगत विनाश के कगार पर खड़ा होता।

इस तरह कह सकते हैं कि जुल्म, अत्याचार तथा अन्याय को समाप्त करने के लिए अपने सारे वंश को कुर्बान करने वाले, खालसे को स्वाभिमान का जीवन-ढंग सिखाने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सारा जीवन एक उपदेश है, मानवता के लिए नवजीवन का संदेश है।

गुरु जी ने अपने जीवन तथा बाणी द्वारा जो अमूल्य उपदेश दिए हैं, वे मनुष्य को अज्ञानता के अन्धेरे जीवन-मार्ग से ज्ञान के प्रकाशमयी जीवन-मार्ग की तरफ ले जाते हैं।

भक्त सैण जी की प्रेमा-भक्ति

-डॉ. मनजीत कौर*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी से भक्ति की निर्मल अमृतमयी धारा निरन्तर प्रवाहित होती प्रतीत होती है। इलाही बाणी में ईश्वर-प्राप्ति के जितने भी मार्ग निरूपित हुए हैं— कर्म-मार्ग, योग-मार्ग, ज्ञान-मार्ग आदि भक्ति की पवित्र धारा से ही सिंचित हैं। स्पष्ट है कि गुरबाणी में अन्य साधनाओं की अपेक्षा भक्ति को ही सर्वोपरि माना गया है। चिन्तकों के चिन्तनानुसार भाव-प्रधान भक्ति रागानुराग कहलाती है, जिसमें अथाह प्रेम का सागर उमड़ता रहता है। यही प्रेमा-भक्ति है।

वास्तव में प्रेम ही ईश्वर है और प्रेमा-भक्ति ईश्वर-प्राप्ति का अनन्य मार्ग। भक्त सैण जी का धनासरी राग में एक शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है, जो उनकी उच्च आत्मिक अवस्था एवं प्रेमा-भक्ति का अनुपम उदाहरण है।

गुरबाणी में भगत (भक्त) शब्द की सुंदर व्याख्या अनेक स्थलों पर दर्शनीय है। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं :

तिथै भगत वसहि के लोअ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ॥ (पन्ना ८)

अर्थात् ईश्वर की अपार कृपा जिन पर हुई वे भक्त 'करम खंड' अर्थात् 'रहमत के खंड' में निवास करते हैं। रहमतों का सागर उनके हृदय में निवास करता है, जिसके परिणामस्वरूप भक्त सदैव आनन्दित रहते हैं। वैसे भी गुरबाणी में इस तथ्य का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि भक्तों के हृदय-घर में सदा आनंद बना रहता है। श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

नानक भगता सदा विगासु॥ (पन्ना २)

अपने भक्तों की रक्षा प्रभु स्वयं करता है। यह प्रकृति का नियम भी है। ईश्वर के अनंत नामों में से एक नाम भक्त-वत्सल भी है। दयालु परमेश्वर अपने भक्तों की हर युग में, हर हाल में सदैव रक्षा करता है। इस संदर्भ में तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी का पावन शबद है :

हरि भगता की जाति पति है
भगत हरि कै नामि समाणे राम॥
हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि
जिन गुण अवगण पछाणे राम॥

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै
भै भगति मीठी लागी ॥
अनदिनु भगति करहि दिनु राती
घर ही महि बैरागी ॥
भगती राते सदा मनु निरमलु
हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥
नानक से भगत हरि कै दरि साचे
अनदिनु नामु सम्हाले ॥ *(पन्ना ७६८)*

भक्त-जनों का मान-सम्मान ईश्वर ही है। भक्त-जन सदैव ईश्वर-बन्दगी में लीन रहते हैं। ऐसे भक्त-जन गुण-अवगुण की पहचान कर लेते हैं और अहंकार को पूर्णतया अपने हृदय से निकाल देते हैं। वे दिन-रात प्रभु की भक्ति में लीन रहते हैं। उनका मन सदैव निर्मल बना रहता है। वे हर पल प्रभु को अपने साथ देखते हैं। गुरु पातशाह जी फरमान करते हैं कि वही भक्त प्रभु के द्वार पर सच्चे माने जाते हैं जो सदैव प्रभु-नाम को हृदय में संभाले रहते हैं।

सच्चे भक्त के सन्दर्भ में श्री गुरु अरजन देव जी भक्त सैण जी का सत्कार करते हुए पावन फरमान करते हैं :

सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥
(पन्ना ४८७)

अर्थात् (तथाकथित) जाति के नाई (भक्त) सैण (जी) लोगों के काम संवारने वाले थे। उनका नाम घर-घर जाना जाने लगा अर्थात् उनकी एक विशेष पहचान बन गई। उनके हृदय में ईश्वर बस गया और उनकी गणना भक्तों में होने लगी।

भक्त सैण जी के जन्म एवं बचपन के विषय में प्रमाणिक तथ्य नहीं मिलते। मैकालिफ के मतानुसार आपके पिता का नाम श्री मुकंद राय तथा माता का नाम श्रीमती जीवन देई था। लगभग १० वर्ष की आयु में आप अपनी बुआ शोभी देवी के पास लाहौर चले गए, जहां रहीम खान नामक उस्ताद से नाई व्यवसाय का काम सीखा और साथ ही तत्व-ज्ञान भी अर्जित करते रहे। कुछ समय के पश्चात् बांधवगढ़ के राजा के पास आकर नौकरी करने लगे। राजा को स्नान करवाना, नाखून काटना, वस्त्र सम्भालना, पैर दबाना और दरबार की हाजरी भरना आपके प्रमुख कार्य थे। भक्त कबीर जी की बढ़ती ख्याति आपके लिए प्रेरणा-स्रोत बनी औऱ आप भी ईश्वर-भक्ति में लग गए। अपने नित्य कर्त्तव्य-पालन के बाद शेष समय प्रभु के सत्संग में व्यतीत करते। सत्संग के परिणामस्वरूप दिनो-दिन आज जी की आत्मिक अवस्था ऊँची होती गई। इस संदर्भ में एक साखी काफी प्रसिद्ध है, जो यहां उल्लेखनीय है :—

भक्त सैण जी तन-मन से राजा की सेवा करते और साथ ही ईश्वर-भक्ति में लीन रहते,

जिसके फलस्वरूप राजा को इनकी सेवा से शारीरिक एवं आत्मिक सुख-सकून प्राप्त होता। भक्त सैण जी की धर्म-पत्नी माता साहिब देवी एवं पुत्र नई भी भक्त जी की तरह अत्यधिक विनम्र एवं सेवाभावी थे, जो श्रद्धालुओं, सत्संगियों की बहुत ही प्रेमपूर्वक एवं श्रद्धा-भावना से सेवा करते थे। चिन्तकों के चिन्तनानुसार भक्त सैण जी का पूरा परिवार चंदन की वाटिका की तरह सुगंध बिखेरने वाला था और इसी सुगंध से प्रभु-प्रेमी ठीक वैसे ही भक्त सैण जी के घर की ओर खिंचे चले आते थे, जैसे भंवरे फूल की सुगंध लेने आ जाते हैं।

एक दिन भक्त सैण जी राजा की सेवा में हाजिर होने जा रहे थे कि रास्ते में साधु-मंडली मिल गई। भक्त जी उन्हें लेकर वापिस अपने घर चले गए। उनकी टहल-सेवा की। फिर सत्संग का प्रवाह चला। सारी रात प्रभु का सत्संग होता रहा। भक्त सैण जी ईश्वर-भक्ति में इस कद्र लीन हो गए कि उन्हें राजा की सेवा में हाजिर होने की सुध ही न रही। दिन चढ़ आया। तब जाकर भक्त सैण जी को ख्याल आया कि ''मैं तो राजा की सेवा में समय पर पहुंचा ही नहीं, उसका स्नानादि नहीं करवा सका। अब तक तो राजा नाराज हो गया होगा और हो सकता है कि मुझे नौकरी से ही निकाल दे।'' यह सोचते हुए जब भक्त सैण जी राज-दरबार पहुंचे तो राजा को अत्यधिक प्रसन्न देखकर दंग रह गए। राजा ने कहा, ''(भक्त) सैण जी! आप दोबारा आ गए! आज आपने जो मेरी सेवा की है, उससे मैं पूरी तरह से प्रसन्नता महसूस कर रहा हूं।'' भाई गुरदास जी का कथन है :

सुणि परतापु कबीर दा दूजा सिखु होआ सैणु नाई।
प्रेम भगति राती करै भलकै राज दुआरै जाई।
आए संत पराहुणे कीरतनु होआ रैणि सबाई।
छडि न सकै संत जन राज दुआरि न सेव कमाई।
सैण रूपि हरि जाइ कै आइआ राणै नो रीझाई।
साध जनां नो विदा करि राज दुआरि गइआ सरमाई।
राणै दूरहुं सदि कै गलहुं कवाइ खोलि पैन्हाई।
वसि कीता हउं तुधु अजु बोलै राजा सुणै लुकाई।
परगटु करै भगति वडिआई॥ (वार १० : १६)

भक्त रविदास जी ने अपने हृदय उद्गारों को अभिव्यक्त करते हुए ईश्वर की अनुकम्पा, दयादृष्टि के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अति भावपूर्ण शबद उच्चारण किया है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा
माथै छत्रु धरै॥१॥रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु
काहू ते न डरै॥१॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु

हरि जीउ ते सभै सरै ॥ (पन्ना ११०६)

अर्थात् हे प्रभु! तेरे बिना ऐसी कृपा कौन कर सकता है! धरती का स्वामी तू गरीबों को सम्मान देने वाला है और उन्हें मान-सम्मान देकर उनके माथे पर छत्र धारण करवाने वाला है। जिस व्यक्ति की छूत सारे जगत को लगती है अर्थात् जो अछूत माना जाता है, तू उस पर भी कृपा-दृष्टि करता है। धरती का मालिक मेरा गोबिंद प्रभु नीचों को ऊंचा कर देता है और ऐसा करते हुए वह किसी से भी डरता नहीं। भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त सधना जी, भक्त सैण जी आदि सभी पार उतर गए। भक्त रविदास जी कथन करते हैं कि हे संत-जनों! ध्यानपूर्वक सुन लो कि प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है।

गुरबाणी में डंके की चोट पर यह उद्घोष किया गया है कि जिस तथाकथित नीच व्यक्ति को कोई नहीं जानता था, वह केवल ईश्वर-नाम-सिमरन द्वारा चारों दिशाओं में विख्यात हो जाता है और सम्मान पाता है। प्रभु-सिमरन से भला कौन-कौन संसार-सागर से पार नहीं उतरा! पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥
नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१ ॥
दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥
तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥ (पन्ना ३८६)

प्रेमा-भक्ति को चिन्तकों ने एक सफल युक्ति माना है, क्योंकि यह व्यक्तिगत न रहकर अपने समाज-सम्प्रदाय ही नहीं, अपितु समूची मानवता हेतु प्रेरणादायी व मानव जीवन को सफल बनाने में कारगर सिद्ध होती है। 'मध्य युग' जिसे मनीषियों ने 'स्वर्ण युग' की संज्ञा दी है, इस काल में भक्ति की जो लहर चली, उसने भूली-भटकी मानवता को एक नवीन दृष्टि प्रदान की। जात-पाँत, छूत-छात, ऊँच-नीच के भेदभाव, आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों से मुक्त करवा कर एक ईश्वर की उपासना पर बल देने एवं नैतिक मूल्यों व मानवीय मूल्यों की महत्ता को समझाने का हर मुमकिन प्रयास भक्त साहिबान द्वारा किया गया।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी तक सभी गुरु साहिबान ने भक्त साहिबान की बाणी का संग्रह किया और सत्कार सहित इनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित की।

भक्त साहिबान ईश्वर-भक्ति के साथ-साथ मेहनत की कमाई भी अत्यन्त निष्ठा एवं लगन से करते थे। भक्त-साहिबान किन विशेष गुणों के कारण प्रभु-मिलाप प्राप्त कर समूची मानवता के लिए पथ-प्रदर्शक बने, इस बारे में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का बहुत ही प्यारा शबद भक्त साहिबान की

विशेषताओं को उजागर करता हुआ उल्लेखनीय है :

धंनै सेविआ बाल बुधि ॥
त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥
बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥
रे मन तू भी होहि दासु ॥५ ॥
जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥
नाई उधरिओ सैनु सेव ॥
मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥
मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥६ ॥. . .
रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥
गुर नानक देव गोविंद रूप ॥ (पन्ना ११९२)

भक्त सैण जी का एक शबद राग धनासरी के अन्तर्गत श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, जो आरती के रूप में नित्य अत्यन्त श्रद्धा-भावना, प्रेमा-भक्ति से ओत-प्रोत हो गायन-श्रवण किया जाता है :

स्री सैणु ॥ धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमला पती ॥१ ॥
मंगला हरि मंगला ॥
नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१ ॥ रहाउ ॥
ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥
तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२ ॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥
पूरन परमानंदु बखानै ॥३ ॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥ (पन्ना ६९५)

इस शबद में भक्त सैण जी का पावन फरमान है कि मैं प्रभु पर बलिहार जाता हूं, क्योंकि वही मेरे लिए धूप, बाती, दीपक और घी की आरती है। ईश्वर-भक्ति का मंगल गीत सदैव गायन करते रहो, क्योंकि राजाओं के राजा-प्रभु का किया हुआ मंगल (शुभ-कल्याणकारी) ही सदैव बना रहने वाला है। हे प्रभु! उत्तम दीपक और निर्मल बाती सब कुछ तुम ही हो, क्योंकि तुम ही निरंजन (माया के प्रभाव से रहित) हो और सम्पूर्ण धन-सम्पदा के स्वामी हो। जो मनुष्य सर्वव्यापक परम आनंद रूप प्रभु के गुण गाता है, वही प्रभु के मिलन का आनंद उठा सकता है। मनमोहक रूप वाले प्रभु! तू मुझे पार उतार ले! भक्त सैण जी कहते हैं कि हे मेरे मन! परमानंद प्रभु का ही भजन कर!

भक्त सैण जी पूर्ण पारब्रह्म प्रभु के गीत गाते हुए उसी में लीन हो गए और उनकी बाणी युगो-युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सुशोभित होकर, अमरता को प्राप्त कर समूचे मानव-जगत के लिए प्रेरणा-पुंज एवं प्रेमा-भक्ति का प्रमुख स्त्रोत बन गई है।

बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी की विलक्षण शहादत

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

सिक्ख पंथ प्रेम-भावना का पंथ है। इस पंथ पर चलने वाले सदैव बड़े से बड़े त्याग, शहादत हेतु तत्पर रहते हैं। यह श्री गुरु नानक साहिब का पूर्व घोषित आदेश है। गुरु साहिबान ने निर्भय हो धार्मिक मूल्यों की रक्षा हेतु शहादत दी और सिक्खों को भी शहादत देना सिखाया। धर्म आत्म-शोधन व ध्यान-विषय है, किन्तु ऐसे अवसर भी आते हैं जब इसे अक्षुण्ण रखने हेतु शहादत अपरिहार्य हो जाता है। जीवन न्यौछावर कर देना, विषम परिस्थितियों को अनुकूल करना, अधर्म को परास्त करना, धर्म की प्रतिष्ठा स्थापित करना और मानव इतिहास को गौरवशाली बनाना शहादत के आवश्यक तत्व हैं, जो दुर्लभ ही प्रकट होते हैं। सिक्ख इतिहास इस दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध इतिहास है। सभी सिक्ख-शहादतों अद्‌भुत हैं, किन्तु कतिपय शहादतों ऐसी हैं जो न कभी भूत काल में हुइ और न भविष्य में संभावित हैं। इन स्वर्णिम शहादतों का स्मरण करते हुए अग्रिम पंक्ति में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों की बहादुरी का विशिष्ट स्थान सदैव सुरक्षित रहने वाला है। औरंगजेब की पवित्र कुरान शरीफ की कसम पर विश्वास कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ा, रात हो चुकी थी। इस दृश्य को अलह यार खान योगी ने निम्नवत कलमबद्ध किया है :

तारों की छांव, किले से सतिगुर रवां हुए।
कस के कमर सवार थे, सारे जवां हुए।
आगे लिए निशां कई, शेरे यिआं हुए।
कुछ पीछे जांनिसार, गुरु दरमियां हुए।
चारों पिसर हुजूर के, हमरह सवार थे।
जोर-आवर और फतह, अजीत और जुझार थे।१४। *(शहीदानि-वफा)*

अलह यार खान योगी लाहौर का रहने वाला मुस्लिम कवि और आध्यात्मिक रुचियों वाला पुरुष था, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से बहुत प्रभावित था। उसने लिखा है कि जब गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब के किले से रवाना हुए तो उनके साथ सशत्र मुस्तैद सिक्ख सवार थे। आगे कई सवार ध्वज लेकर चल रहे थे। कई सवार सिक्ख पीछे थे। मध्य में गुरु साहिब जी चल रहे थे। उनके साथ ही चारों साहिबजादे चल रहे थे। गुरु साहिब जी की

* *ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

धर्म-पत्नियां, जिन्हें सिक्ख शब्दावली में 'महिल' कहा जाता है, गुरु साहिब की माता, माता गुजरी जी के साथ चल रही थीं। गुरु साहिब व सिक्ख जब सरसा नदी तक पहुंचे, नितनेम व ध्यान का समय हो चुका था। गुरु साहिब ने स्नानादि से निवृत्त हो ध्यान लगा लिया। इस बीच मुगलों ने अपनी झूठी कसम तोड़ दी और पीछा करते हुए गुरु साहिब के काफिले को आ घेरा। सिक्ख सचेत थे। उन्होंने तुरंत मुगलों का राह रोक लिया और युद्ध आरंभ हो गया। रात का अन्धकार था और वर्षा हो रही थी। कुछ सिक्ख ध्यान में रत गुरु साहिब के चारों ओर दीवार बन कर डट गये। गुरु साहिब ने एकाग्रचित्त अपना नितनेम सम्पूर्ण किया। उन्होंने जब आंखें खोलीं और मुगलों की करतूत सुनी तो पलक झपकते ही शस्त्र धारण कर मैदान में आ गये। गुरु साहिब की तेग चली तो वैरी सेना त्राहि-त्राहि करने लगी। शीघ्र अपना भारी नुकसान होता देख मुगल मैदान छोड़ कर भाग गये। अब सरसा नदी पार करने की तैयारी हुई। गुरु साहिब रोपड़ की दिशा में जाना चाहते थे। भारी वर्षा के कारण नदी भी उफान पर थी। कई सिक्ख नदी में उतरे तो बहने लगे। गुरु साहिब का काफी सामान व अनेक अमूल्य ग्रन्थ भी नदी के तेज प्रवाह में बह गये। पूरी तरह उजाला हुआ नहीं था, आकाश में काले मेघ उमड़ उमड़ कर गरज-बरस रहे थे। शत्रु किसी भी समय हमलावर बन सकता था, जबकि गुरु साहिब अनावश्यक रक्तपात नहीं चाहते थे। प्रकृति की अफरा-तफरी थी अथवा विधाता का रचा संयोग कि कारवां एकजुट न रह सका। गुरु साहिब का परिवार व सिक्ख कई समूहों में बंट गये। सरसा नदी के इस तट पर अति अल्प काल में ही गौरवमयी इतिहास के कई बीज बो दिये गये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दल में सिक्खों के साथ बड़े साहिबजादे— बाबा अजीत सिंघ जी व बाबा जुझार सिंघ जी भी थे, जो चमकौर साहिब की ओर बढ़ने लगे। गुरु साहिब के महिल माता सुंदरी जी व माता साहिब कौर जी भाई मनी सिंघ जी आदि के साथ दिल्ली की दिशा में बढ़ रहे थे। उधर छोटे साहिबजादे— बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी अपनी दादी माता गुजरी जी के साथ रह गये। उनके साथ एक पुराना सेवक था। उस रात की कैसी परिस्थितियां थीं, कैसे उन्होंने सरसा नदी पार की, इसका सजीव वर्णन भाई सोहन सिंघ की कृति 'साका सरहिंद' में बड़े भावनात्मक ढंग से मिलता है :

वड्डे साहिबजादे सी गुरां दे नाल जी !
माता गुजरी दे छोटे-छोटे लाल जी !

बच्चिआं दे नाल दरिआ लंघदी।
रात सी हनेरी जान होई तंग सी।
पैर ना खलोंदे सीत जावे हारदी।
पार लावीं रब्बा! माता है पुकारदी।
चुक्क-चुक्क पुत्तरां दे मुख चुंमदी।
दुक्खां नाल पैण कालजे नूं डुम जी।

सरसा नदी पार करना ही उस रात एक बड़ा कार्य बन गया था। भाई सोहन सिंघ के अनुसार बड़े दो साहिबजादे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ थे, जबकि छोटे दो साहिबजादों की जिम्मेदारी माता गुजरी जी ने संभाल रखी थी। अंधेरे से भी जूझना था और उफनती हुई नदी को पार भी करना था। यह एक साथ उस समय करना पड़ रहा था जब घोर सर्दी पड़ रही थी और नदी के पानी में पैर टिकाना दुष्कर हो रहा था। भाई सोहन सिंघ के अनुसार गुरु-घर का खजाना माता गुजरी जी के पास था। उसे भी संभालना था। माता गुजरी जी का उत्तरदायित्व अति महत्वपूर्ण हो गया था जिसे यथार्थ और भावना के समन्वय से ही निभाया जा सकता था। उनके साथ सहायता के लिए मात्र एक सेवक था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर लिखित अपनी पुस्तक में सिक्ख विद्वान् प्रो. हरबंस सिंघ ने लिखा है कि कुछ सिक्खों ने माता गुजरी जी व छोटे साहिबजादों को नदी पार करने में सहायता की, जबकि गुरु साहिब व उनके साथ का दल घोड़ों सहित ही नदी में उतर गये थे। सरसा नदी पार करने के बाद का जो घटनाक्रम इतिहास के पन्नों पर अंकित है, उसके अनुसार सरसा नदी पार करने के पश्चात सारे सिक्ख एकजुट नहीं हो पाये थे। इस बीच रोपड़ के रंघड़ों ने अकस्मात हमला कर दिया। गुरु साहिब ने उस हमले का भरपूर जवाब दिया और खदेड़ दिया। डा. हरचंद सिंघ सरहिंदी ने लिखा है कि रंघड़ों के अचानक हमले में हुई गड़बड़ी में माता गुजरी जी व छोटे साहिबजादे गुरु साहिब से बिछड़ कर अन्य दिशा में बढ़ गये। उनके साथ रसोइया गंगू था। माता गुजरी जी के समक्ष परिस्थितियां निरंतर विषम होती जा रही थीं। कोई साधारण स्त्री होती तो अब तक हताश होकर परिस्थितियों से हार मान चुकी होती और अपना संयम गंवा बैठती, किन्तु यह माता गुजरी जी थीं, जिन्होंने कदम-कदम पर पहले अपने पति श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का साथ दिया था और अब अपने सुपुत्र व पोतों के लिए संकटमोचक बन रही थीं। उन्होंने श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत वाला समय देखा था और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को नौ वर्ष की आयु में गुरुआई पर आसीन होने से लेकर पंथ को खालसा का रूप देने तक कठिन परिस्थितियों

की लंबी शृंखला में बहादुरी से पराजित करते देखा था। माता गुजरी जी आध्यात्मिक व व्यवहारिक, दोनों ही रूप से इतने सबल थे कि प्रतीत हो रहा था कि विषमतायें उनके लिये बनी ही नहीं थीं। यही संस्कार गुरु साहिब के चारों साहिबजादों में भी आये थे। बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतिह सिंघ जी उत्सुकता अवश्य प्रकट कर रहे थे कि साथ के लोग कहां गये, किन्तु अनजान राहों पर आगे बढ़ने के उत्साह का कोई अभाव नहीं था :

दादी से बोले, अपने सिपाही किधर गये?
दरिया पे हमको छोड़ कर, राही किधर गये?
तड़पा के हाए! सुरति-माही किधर गए?
अब्बा भगा के लशकरि-शाही किधर गए?
भाई भी हमको भूल गए, शोकि-जंग में!
अपना ख्याल तक नहीं, ज़ौकि तुफंग में! ४८।
(शहीदानि-वफा)

बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि जी सिंघ भले ही आयु में छोटे थे और दादी माता गुजरी जी उन्हें अपने आंचल में बार-बार छिपा रही थीं, स्नेह बरसा रही थीं कि वे अचिंत रहें, किन्तु दोनों साहिबजादे अपने चारों ओर की बदल रही परिस्थितियों के प्रति पूर्णत: सचेत थे। उनमें कारण जानने की सहज उत्सुकता थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दोनों छोटे साहिबजादे माता गुजरी जी से पूछ रहे थे कि उनके आस-पास जो सिक्ख योद्धा अब तक चल रहे थे वे कहां चले गये? सरसा नदी तक पूरा कारवां था, वो अब हमें छोड़ गया है। कहीं दिखता नहीं। पिता जी पूरे दल के साथ अकस्मात कहां चले गये हैं? दोनों छोटे साहिबजादों को अपने बड़े भाइयों पर बहुत गर्व था। उन्हें विश्वास था कि बड़े भाई कभी साथ नहीं छोड़ेंगे। उन्हें भी साथ न देख कर छोटे साहिबजादे और अधिक उत्सुक हो रहे थे। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि क्या युद्ध के उत्साह में वे उन्हें भी भूल गये हैं? इसका तात्पर्य था कि उन्हें मुगलों से युद्ध का पूरा आभास था। छोटे साहिबजादों को यह चिंता भी हो रही थी कि क्या उनके भाई भीषण युद्ध में स्वयं को सुरक्षित रख सकेंगे, ताकि उनसे पुन: मेल हो सके। उन्हें स्वाभाविक चिंता भले ही थी, किन्तु विश्वास भी था कि उनका मेल पिता व भाइयों से अवश्य होगा। अलह यार खान योगी ने इस संवाद का वर्णन करते हुए लिखा है कि बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी ने कहा कि जब युद्ध में विजयी होकर बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ वापिस आयेंगे तो हम रूठ जायेंगे। सभी लोग बार-बार मनायेंगे, तब भी हम नहीं मानेंगे। इस

संवाद में जहां छोटे साहिबजादों की मानसिक परिस्थितियों के प्रति पूर्ण जागरूकता प्रकट होती है वहीं आशावाद भी झलकता है :

जब रण अजीत जीत के तशरीफ लाएंगे।
अब्बा के साथ जिस घड़ी जौझार आएंगे।
करके गिला हर एक से हम रूठ जाएंगे।
मात कभी, पिता कभी भाई मनाएंगे।
हमको गले लगा के, कहेंगे वो बार-बार।
मान जाओ लेकिन हम,
नहीं मानेंगे जीनहार ।४९।(शहीदानि-वफा)

विषम व घोर विपरीत परिस्थितियों में लेशमात्र भी निराशा, हताशा का भाव नहीं था। आने वाले दिनों में उनकी यह अंतर अवस्था ही उनकी शक्ति बनी और विलक्षण शहीदी का इतिहास रचा गया। ऐसे ही अनजानी राह पर चलते हुए शाम होने लगी थी। साथ में एकमात्र गुरु-घर का सेवक गंगू था। माता गुजरी जी के मन में भिन्न विचार चल रहे थे। उन्हें अपनी नहीं, साहिबजादों की चिंता हो रही थी कि इन्हें कुछ हो गया तो . . .। चतुर गंगू ने उनकी दुविधा को भांप लिया और अपने गांव खेड़ी चलने का सुझाव दिया जो निकट ही था। भाई सोहन सिंघ के अनुसार गंगू इक्कीस वर्ष से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में था और भोजन पकाने का कार्य करता था। गुरु साहिब जी उसे बहुत मानते थे। गंगू ने माता गुजरी जी के पास बहुत-सा धन देखा तो वह लालच में अंधा हो गया। गंगू ने माता गुजरी जी से कहा कि रात उसके घर गुजार लें, कल गुरु साहिब का ठिकाना ढूंढ कर उनसे मेल हो जायेगा। कोई अन्य विकल्प न जान कर माता गुजरी जी गंगू के साथ चले आये। गंगू ने भोजन के लिए कहा तो माता गुजरी जी ने मना कर दिया और दोनों साहिबजादों को साथ लिटा कर सोने का प्रयास करने लगे, किन्तु नींद कहां आती! उधर गंगू प्रतीक्षा कर रहा था कि कब माता गुजरी जी को नींद आये और कब वह उनका सारा धन चोरी कर ले। जब माता जी को जागते देर हो गई तो गंगू अन्य कुत्सित योजनायें बनाने लगा। कहते हैं कि गंगू को कुछ भी अनिष्ट करने से उसकी मां ने रोका। जब भोर होने से कुछ समय पहले माता गुजरी जी निद्रामग्न हो गईं तो मौका देख गंगू ने धन चुरा लिया और शोर मचा दिया। शोर सुन माता गुजरी जी की नींद खुल गई। उन्होंने गंगू से कारण पूछा। गंगू बोला कि चोर आये थे और उनका धन चुरा कर ले गये हैं। माता गुजरी जी गंगू का झूठ, फरेब जान गईं और उसकी बात पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया। गंगू अपनी चोरी छिपाने के लिये प्रतिशोध से भर गया और निकट के गांव मोरिंडा जाकर मुगल सिपाहियों को बता दिया

कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की माता व दो पुत्र उसके घर में ठहरे हुए हैं।

मुगलों के लिये इससे अच्छा समाचार और क्या हो सकता था! माता गुजरी जी व आठ वर्षीय बाबा जोरावर सिंघ जी और पाँच वर्षीय बाबा फतहि सिंघ जी को गिरफ्तार कर सरहिंद लाया गया। सरहिंद के सूबेदार वजीर खान ने उन्हें किले के एक ठंडे बुर्ज में कैद कर लिया। अगले दिन वजीर खान की कचहरी में बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी को पेश किया जाना था। माता गुजरी जी जान गई थीं कि आगे क्या होने वाला है। वे पूरी तरह से सहज थीं। दोनों साहिबजादे भी सहज थे और उत्साह से ऐसे भरपूर थे मानो अपने पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सौंपा हुआ कोई बड़ा कार्य पूरा करने जा रहे हों। माता जी ने बड़े लाड़-दुलार से उन्हें तैयार किया और अनेकानेक आशीर्वाद दिये। जब दोनों साहिबजादे वजीर खान की कचहरी में लाये गये, कचहरी पूरी भरी हुई थी। अलह यार खान योगी ने उस दृश्य की कल्पना की कि साहिबजादों का वहां होना ऐसा ही था जैसे फूल कांटों से घिरे हों। उन्हें इसलाम धर्म स्वीकार करने के लिये कहा गया और हर तरह के दबाव डाले गये। जब किसी भी दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वे अपने संकल्प पर पूरी तरह से दृढ़ रहे तो वजीर खान खीझ गया। वह साहिबजादों को निर्ममता व मौत का भय दिखाने लगा। अलह यार खान योगी ने लिखा है कि बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी ने इसका कड़ा प्रतिवाद किया तथा वजीर खान को आईना दिखाया :

सतिगुर के लाडलों ने दिया रुआब से जवाब।
आती नहीं शर्म है जरा, तुझको ऐ नवाब!
दुनिया के पीछे करता है,
क्यों दीन को खराब?
किस जा लिखा है जुल्म,
दिखा तो हमें किताब?८०।

(शहीदानि-वफा)

बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी की आयु देख कर अहंकारी वजीर खान और उसके दरबारी भ्रमित हो गये थे कि ये तो बच्चे हैं। इन्हें जैसा चाहेंगे, बहला-फुसला लेंगे, रौब और भय से कुछ भी स्वीकार करा लेंगे। उन्हें यह नहीं पता था कि वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्र हैं और आठ वर्ष व पाँच वर्ष की आयु में ही ऐसा सिद्ध कर चुके हैं जो कोई व्यक्ति आठ और पाँच जन्मों में भी प्राप्त नहीं कर पाता। उन्होंने अपने जीवन में पल-पल इतिहास का सृजन होते देखा व महसूस किया था। आत्म-बोध व बल उनके रक्त में प्रवाहित हो रहा था। उन्हें धर्म व अधर्म

का भेद भली-भांति स्पष्ट था। उन्होंने पुरअसर आवाज में निडर होकर वजीर खान से कहा कि क्या उसे तनिक भी खौफ नहीं है कि क्षणिक सांसारिक उपलब्धि के लिए वह अधर्म अपना रहा है। साहिबजादों ने उसे चुनौती दी कि वह बताये कि किस धर्म-ग्रंथ में अत्याचार करने की अनुमति दी गई है। साहिबजादों ने कहा कि उसके पवित्र ग्रंथ कुरान में भी कहीं इस तरह के जुल्म की इजाजत नहीं है, जैसा वह कर रहा है। उसका क्या, उसके शहंशाह औरंगजेब का भी कोई ईमान नहीं है। साहिबजादों ने साहसपूर्ण ढंग से अपना अंतिम निर्णय भरी कचहरी में सुनाया :

हमरे बंस रीति इम आई।
सीस देति पर धरम ना जाई।

इसका अर्थ यह था कि साहिबजादों में कोई दुविधा, संशय नहीं था। वे भविष्य को साफ-साफ देख रहे थे और यह भी निर्णय कर चुके थे कि उन्हें कौन-सा मार्ग चुनना है। यह गुरु साहिबान जी की स्थापित परंपरा के अनुकूल ही नहीं खालसा पंथ की शान को अधिक ऊँचाइयों पर ले जाने वाला था। वजीर खान भ्रम में था और साहिबजादों को आम बच्चों के रूप में ही देख रहा था। वजीर खान ने दसम पिता के साहिबजादों को वापिस ठंडे बुर्ज में ले जाने और अगले दिन पुनः कचहरी में पेश करने का हुक्म दिया। उसे विश्वास था कि वह साहिबजादों का मनोबल तोड़ने व इसलाम धर्म स्वीकार कराने में सफल रहेगा और इस तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को आघात पहुंचा सकेगा।

जब बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतिह सिंघ जी पुनः कचहरी में लाये गये तो पूर्व की ही तरह पूरे उत्साह व आत्मविश्वास से भरे नजर आये, जो वजीर खान को सहन न हुआ। पुनः साहिबजादों को धमकाया गया, किन्तु वे अडोल रहे। अपना मन्तव्य पूरा न होता देख वजीर खान ने उन्हें फिर वापिस ठंडे बुर्ज भेज दिया। तीसरी व अंतिम पेशी १३ पोष को हुई। छोटे साहिबजादों को पुनः साम, दाम, दंड, भेद से विचलित करने के असफल प्रयास किये गये। साहिबजादे अपने संकल्प पर पूरी तरह से दृढ़ रहे। इससे वजीर खान क्रोध से भर उठा। उसने साहिबजादों को क्रूरतम ढंग से मृत्यु-दंड देने का फैसला किया।

इतिहासकारों के अनुसार मलेरकोटला के नवाब ने इसका विरोध किया था, किन्तु उसका विरोध निष्प्रभावी रहा। साहिबजादों ने वजीर खान को अपनी अडोलता से साफ संदेश दिया, जिसे अलह यार खान योगी ने

निम्न शब्दों में व्यक्त किया है :

सच को मिटाओगे तो मिटोगे जहान से !
डरता नहीं अकाल शहंशह की शान से !९६ ।
(शहीदानि-वफा)

बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी को वजीर खान के आदेश पर दीवारों में चिनवा दिया गया और किसी ने कोई विरोध नहीं किया। इससे अधिक घृणित, क्रूर व अक्षम्य अपराध आज तक मानवीय सभ्यता के इतिहास में नहीं हुआ है। दूसरी ओर इससे अधिक महान व पवित्र शहादत भी आज तक नहीं हुआ है, जिसने धर्म की प्रतिष्ठा को शिखर पर पहुंचाने का कार्य किया। बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी का धर्म के प्रति समर्पण एवं संकल्प अकल्पनीय था। वे माता-पिता व भाइयों से बिछड़े हुए थे, कष्टपूर्ण सफर से थके हुए थे और चारों ओर वैरियों से घिर चुके थे। वजीर खान जैसा धूर्त और क्रूर व्यक्ति उनके सामने था, जिसका कोई दीन-ईमान नहीं था। इसके पहले उनका अपना ही सेवक उनसे विश्वासघात कर चुका था। इससे यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि दोनों छोटे साहिबजादों के समक्ष कैसी दबावपूर्ण परिस्थितियां निरंतर कई दिनों तक बनी रही होंगी। इसके बावजूद अपने संकल्प पर डटे रहना और स्वयं मृत्यु का वरण करना अद्‌भुत, परम अद्‌भुत था। यह बिना तात्कालिक प्रेरणा के संभव नहीं था। यह प्रेरक शक्ति उन्हें अपनी दादी माँ माता गुजरी जी से प्राप्त हुई थी।

माता गुजरी जी जानते थे कि शहादत की परिस्थितियां कैसी होती हैं। अपने पति श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत की परिस्थितियों की संभवत: वे सबसे निकटस्थ साक्षी थीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत का जिन सांसारिक व मानवीय सम्बन्धों पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ने वाला था, वह श्री गुरु तेग बहादर साहिब व माता गुजरी जी का ही था। बाबा बकाला साहिब में दो दशक तक श्री गुरु तेग बहादर साहिब जप, ध्यान कर सके थे, उसमें सबसे महत्वपूर्ण योगदान माता गुजरी जी का ही था। माता गुजरी जी ने सहर्ष श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के लिये यह जानते हुए विदा किया था कि अब पुन: मेल नहीं होगा। यह एक अवसर था। वे साहिबजादों को लगातार तीन दिन उसी मन:स्थिति में ठंडे बुर्ज से सजा-संवार कर विदा करती रहीं। यह अधिक कठिन व लंबी परीक्षा थी। परिवार से बिछड़ने का दुख और साहिबजादों की सुरक्षा की चिंता दोनों अकस्मात एक साथ सहने पड़े थे। इसके साथ ही बिछड़े हुए परिवार की भी स्वाभाविक

चिंता थी, यद्यपि माता गुजरी जी जानते थे कि सारे संसार की चिंताओं का निवारण करने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रहते परिवार और साथ के सिक्खों की चिंता का कोई कारण नहीं है। गुरु-घर के नौकर गंगू का सहारा मिला, किन्तु वह दुख को कई गुना बढ़ाने वाला साबित हुआ। माता गुजरी जी, जिन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसे परमात्मा-रूप के संसार में आगमन का महान परोपकार किया था, एक पल को भी विचलित नहीं हुए थे। उनका एक क्षण का भी डोलना इतिहास बदल देता। उनकी अडोलता व संयम उनकी ही नहीं, बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी की भी ताकत बने, जिससे वे वजीर खान की हर चाल को निर्भीकता से ठोकर मारते हुए अपनी शहादत को धर्म-रक्षा का उत्सव बना देने में सफल हुए थे। निरंतर पांच दिन की अवधि का एक-एक पल असहनीय तनाव, अनिश्चितता और पीड़ा से भरा हुआ था। माता गुजरी जी ने स्वयं भी इसका सामना किया और अपने लाडले पौत्रों को भी इसे अपने अनुकूल करना सिखाया। उन्हें भीषण ठंड तथा भूख-प्यास से भी लड़ना था और तन की शक्ति को भी बनाये रखना था। उन्होंने न किसी से आशा रखी, न कोई याचना की। उन्हें मात्र अकाल पुरख व उसके न्याय पर विश्वास था। उन्होंने हर स्थिति हेतु स्वयं को तैयार कर लिया था। यह संसार का सबसे कठिन और किसी अन्य के लिये असंभव कार्य था। इन पाँच दिनों के एक-एक पल का पूरा हिसाब करने के बाद ही बोध हो सकता है कि कितनी घनी पीड़ा के समय के गर्भ से इतिहास का जन्म होता है, जिस पर युगों को गर्व होता है। साहिबजादों की शहादत का वास्तविक मूल्यांकन तभी संभव है जब उसे माता गुजरी जी की शहादत से जोड़ कर देखा जाये। उन्हें जब साहिबजादों की शहादत का समाचार मिला तो वे भी परमात्मा के चरणों में जा विराजीं।

छोटे साहिबजादों की शहादत ने सबसे बड़ा कार्य किया कि किसी अन्य वजीर खान के अस्तित्व में आने की सारी संभावनाओं का सदा के लिये समूल नाश कर दिया। इसके बाद न कोई दूसरा वजीर खान पैदा हुआ और न ही वो सरहिंद रहा। यह मानवता के लिये अतुलनीय राहत थी। यदि मन में सदैव धर्म का संकल्प दृढ़ रखना है तो श्वास-श्वास बाबा जोरावर सिंघ जी, बाबा फतहि सिंघ जी व माता गुजरी जी को याद रखना होगा।

साहिब के साहिबज़ादे

-भाई निशान सिंघ गंडीविंड

जब दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अकाल पुरख की कृपा द्वारा सन् १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में विचित्र ढंग से खालसा पंथ की साजना की, उस समय साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी और बाबा जोरावर सिंघ अमृत-अभिलाषियों की कतार में लग कर गुरु-पिता जी की उपस्थिति में पाँच प्यारों से खंडे की पाहुल लेकर सिंघ सज गए।

सुनहरी पोशाक, गले में कृपाण, सिर पर सजे दुमाले और कलगी साहिबज़ादों के नूरी मुखड़ों पर चार चाँद लगा रही थी। छोटे साहिबज़ादे गुरु-पिता जी से शस्त्र-संचालन की विद्या लेते और दादी माँ से गुरबाणी, गुरु साहिबान और उनके श्रेष्ठ सिक्खों की साखियाँ सुनते। कई बार जब माता जी साहिबजादों को गोद में बिठा कर शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी, भाई दिआला जी आदि की जीवन-गाथा बड़े वैराग्य में आकर सुनाते तो उस समय साहिबज़ादों का जोश में आकर खून खौल उठता और ज़ालिम व बर्बर लोगों द्वारा धर्म के नाम पर किये जाते अधर्म को रोकने के लिए जान कुर्बान करने तक के प्रण किये जाते। माता गुजरी जी ने श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धांत व सिक्ख रीति-रिवाज़ों से अवगत करवा कर साहिबज़ादों का आत्मिक बल बढ़ाने में भरपूर योगदान दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा एक अकाल की उपासना करना, जातिगत भेदभाव से रहित प्रचार, लंगर के लिए एक ही पंगत, नगाड़े की चोट, किलों का निर्माण, निशान साहिब का झूलना, गुरु जी के नेतृत्व में गरीबों और तथाकथित शूद्रों का आत्मिक तौर पर जाग उठना ख़तरा जानकर पहाड़ी राजा गुरु जी के साथ आने-बहाने लड़ाई करते, परन्तु दशमेश जी की फौज से भारी जानी और माली नुकसान करवा कर हर बार शर्मिन्दगी का मुँह देखते। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ' ज़फ़रनामा' में बताते हैं :

मनम कुशतहअम कोहीआ ब्रतप्रसत ॥
कि आं बुत प्रसतन्दो मन बुत शिकसत ॥

राजा भीम चंद पहाड़ी राजाओं की

**हेंड ग्रंथी, गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा जी, ठट्ठा, जिला श्री अमृतसर। फोन : ९८१५४-४३२८५*

मिलीजुली फौजों का प्रमुख था। उसने एक बार योजनाबद्ध ढंग के साथ श्री अनंदपुर साहिब पर हमला किया, परन्तु उसकी योजना असफल हो गई और वो लगा अपना बचाव करने। इस जंग में शत्रु गुज्जर सरदार जमतुल्ला भाऊ मारा गया। साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी के घोड़े के पेट में नेज़ा लगा, मगर वे तब तक एड़ियां उठा-उठा कर तीर चलाते रहे, जब तक दूसरे घोड़े का इंतज़ाम न हुआ। इस जंग में आप जी ने शत्रु की लाशों के ढेर लगा कर बड़ी शूरवीरता दिखाई। दुश्मन फौज वापस भाग गई।

एक दिन दीन-दुनिया के मालिक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में देवदास नामक ब्राह्मण पहुँचा। उसने रो-रो कर बताया कि ''सच्चे पातशाह जी! मैं अपनी पत्नी का गौना लेकर आ रहा था। . . . हुशियारपुर के निकट बस्सी पठाणां का सरदार जाबिर खान मेरी पत्नी और धन-जवाहरात आदि छीन कर ले गया है। कृपा कीजिए! मेरी शरणगत् की लाज रख लीजिए!''

सतिगुरु पातशाह जी ने ब्राह्मण की पुकार सुनते ही साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी के नेतृत्व में सौ घुड़सवार सिंघों के जत्थे को बस्सी पठाणां पर हमला कर ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाने के लिए भेजा। गुरु-पिता जी के हुक्म की पालना करते हुए बाबा अजीत सिंघ जी ने सूर्योदय से पहले ही बस्सी पठाणां पर हमला कर जाबिर खान की हवेली को चारों तरफ से घेर लिया। हवेली का दरवाज़ा टूटने की आवाज़ सुनकर पठान उठ खड़े हुए, लेकिन सिंघों के साथ टक्कर लेने की हिम्मत किसी ने न की। बाबा अजीत सिंघ जी ने बड़ी फुर्ती के साथ जाबिर खान को संभलने से पहले ही उसके शयन कक्ष में से बंदी बना लिया और उसकी कैद में से ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ा लिया। पठान जाबिर खान को तीरों द्वारा छलनी कर मौत के घाट उतार दिया गया। ब्राह्मण देवदास को उसकी पत्नी देकर विदा किया गया।

एक बार साहिबज़ादे नेज़ाबाजी, गतका आदि खेल रहे थे। बाबा फतहि सिंघ जी, जो उस समय तीन वर्ष के थे, वे भी साथ खेलने आ गए। बड़े भाइयों ने कहा, ''आप नहीं खेल सकते! आप अभी छोटे हो!'' तब बाबा फतहि सिंघ जी अंदर चले गए। अपने शीश पर पहले एक दुमाला सजाया, फिर दूसरा, फिर तीसरा . . . दुमाला सजाकर अपना कद अपने भाइयों से भी ऊँचा कर लिया। फिर आकर कहने लगे, ''अब तो मैं बड़ा हो गया हूं न। अब तो खेल सकता हूं!'' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी यह सब देख कर बहुत प्रभावित हुए। साहिबज़ादा बाबा फतहि सिंघ जी को गोद में लिया और संगत में एलान

किया, ''बाबा फतहि सिंघ! इस बाणे वाले निहंग सिंघों का पंथ तुम्हारे हवाले करता हूं। यह अकाली जत्था होगा, जो किसी के आगे नहीं झुकेगा।'' फिर संगत में से पांज सिंघ— भाई ऊदे सिंघ, भाई टहिल सिंघ, भाई ईशर सिंघ, भाई देवा सिंघ और भाई सुलक्खण सिंघ को नए नीले बाणे में सजा कर बाबा फतहि सिंघ जी का निहंग जत्था स्थापित किया। यह जत्था सन् १७०४ में स्थापित हुआ। *(भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश)*

मक्कार और फ़रेबी पहाड़ी राजाओं ने मुग़ल शासक औरंगजेब को विनती कर, पत्र लिख कर भड़काया कि सिक्ख शक्ति को दबाना चाहिए नहीं तो यह मुग़ल सत्ता के लिए ख़तरा बन जायेगी। औरंगजेब जिस भी फ़ौज के जरनैल को श्री अनंदपुर साहिब पर हमला करने के लिए भेजता, वही सतिगुरु जी की शरण में आकर मुरीद बन जाता। जब इस बात का उसे पता चला तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने कठोरता के साथ दिल्ली, लाहौर, सरहिंद, जम्मू , मुलतान आदि के नवाबों और पहाड़ी राजाओं को अपनी भारी फौजों (टिड्डी दल) सहित श्री अनंदपुर साहिब पर हमला कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जिंदा पकड़ कर या उनका शीश काट कर लाने के हुक्म दिए। शत्रु दल की फौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर बहुत भारी हमला किया, परन्तु मेरे प्रीतम-प्यारे की खालसा फौज ने शत्रु का इतना भारी जानी-माली नुकसान किया कि उनके हौसले पस्त हो गए। फिर भी शर्म के मारे पीछे न गए, बल्कि श्री अनंदपुर साहिब को चारों तरफ से घेर कर बैठ गए। गुरु जी के बब्बर शेर— खालसे हमला कर शत्रु-दल की बोटी-बोटी करते, उनका जंगी सामान, रसद आदि लूट कर वापस आ जाते। सतिगुरु जी की फौज और घोड़ों की संख्या भूख, बीमारी की लपेट में आने पर तथा शहीद होने के कारण कम हो रही थी। दूसरी तरफ़ शत्रु द्वारा डाले घेरे की मियाद बढ़कर सातवें महीने में पहुँच गई और फौज की संख्या भी दिन-ब-दिन बढ़ती गई।

नई चाल चलते हुए पहाड़ी राजाओं तथा औरंगजेब ने गाय और कुरान शरीफ की कसमें खाकर सतिगुरु जी से कहा, ''आप श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर जिस तरफ़ जाना चाहो, चले जाओ. . . हम आप जी का रास्ता नहीं रोकेंगे। अगर हम अपनी खाई कसमों से पलटेंगे तो हमारा धर्म-ईमान भ्रष्ट होगा। हम ईश्वर के दरबार में गुनहगार होंगे।''

सतिगुरु पातशाह ने बैलगाड़ियों, घोड़ा-गाड़ियों पर फटे-पुराने कपड़े, जूते, कूड़ा-करकट आदि भर कर, ऊपर सुंदर कपड़े डाल दिए और बैलों, घोड़ों, खच्चरों के सिर पर मशाल बाँध कर जला दी। फिर रात के समय उन्हें किले से बाहर भेज दिया। शत्रु-दल ने

समझा कि गुरु जी अपने कीमती बहुमूल्य खजाने के साथ किले से बाहर जा रहे हैं। उन्होंने झटपट हमला बोल दिया। एक तो उन्होंने अपने धर्म-ईमान को लाज लगाई, दूसरा फटे-पुराने कपड़े, फटे जूते और कूड़ा-करकट लूट कर शर्मिन्दगी हासिल की। सतिगुरु पातशाह ने उन दुष्टों को खूब फटकारा और सिक्खों को आगे से सचेत कर दिया कि इन पर कभी विश्वास मत करना।

दशमेश पिता और सिक्खों ने मिल कर विचार किया कि शत्रु-दल के विरुद्ध जूझते हुए सुरक्षित स्थान पर जाकर फिर से तैयारी कर मुग़ल हुकूमत के विरुद्ध संघर्ष जारी रखना चाहिए। भाई गुरबख़श सिंघ जी को गुरुद्वारों की सेवा-संभाल सौंप कर ५ और ६ पौष की मध्यवर्ती रात्रि, संवत् १७६१ को जंगबंदी का एलान कर सतिगुरु जी परिवार और प्यारे सिक्खों सहित कीरतपुर साहिब की ओर चल पड़े। सरसा नदी के किनारे अमृत वेले अभी आसा की वार का पाठ हुआ था कि दुश्मनों की भारी फ़ौज ने आ हमला किया। साहिब के साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी ने बड़ी दृढ़ता और होशियारी के साथ शत्रुओं की फौज को उलझाए रखा। भाई जीवन सिंघ जी और भाई उदे सिंघ जी आप जी का सहयोग करते हुए शहीद हो गए। बारिश होने के कारण सरसा नदी का जल-स्तर बढ़ा हुआ था। नदी पार करते समय बहुत-से सिक्ख और सिक्ख साहित्य सरसा नदी की भेंट चढ़ गया। सरसा नदी पर हुए परिवार विछोड़े में बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी आप जी के साथ थे तथा छोटे साहिबज़ादे— बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी अपनी दादी माँ माता गुजरी जी के साथ सरसा नदी के किनारे-किनारे हो चले। किसी समय गुरु-घर की चाकरी करने वाला गंगू माता गुजरी जी को अपनी मीठी बातों में उलझा कर साहिबज़ादों सहित अपने घर गाँव सहेड़ी (खेड़ी) ले गया।

सतिगुरु जी अपनी गिनती-मिनती की फ़ौज के साथ अभी रोपड़ ही पहुँचे थे कि वहां पठानों ने आ हमला बोला। शत्रु-दल की फौज की मारकाट करते हुए आप चमकौर साहिब पहुँच गए। इस समय आप जी के साथ ४० सिक्ख और दो बड़े साहिबज़ादे थे। चमकौर साहिब के चौधरी बुधी चंद ने सतिगुरु जी को दुश्मनों के साथ टक्कर लेने के लिए सुरक्षित ठिकाने के रूप में अपनी कच्ची हवेली दे दी और भोजन-पानी छकाया। शत्रु-दल की बड़ी संख्या वाली फ़ौज ने हवेली को आ घेरा। अल्लह यार खान योगी के शब्दों में, सतिगुरु पातशाह हवेली के बुर्जों पर चढ़ कर दूर-दूर तक देख रहे थे और शत्रु-दल के साथ

दो हाथ करने की तजवीज़ बना रहे थे। निकट खड़े प्यारे भाई दया सिंघ जी को हवेली की तरफ इशारा कर कहते हैं :

जिस खित्ते में हम कहते थे आना, यह वही है। कल लुट कर जिस जगह से जाना, यह वही है। जिस जा पे है बच्चों को कटाना, यह वही है। मट्टी कह देती है ठिकाना, यह वही है।६ (गंजि-शहीदां)

दशम पिता जी ने अपनी गिनती की फ़ौज को संबोधित किया— ''खालसा जी! आज सिक्खी का इम्तिहान होना है! अकेले-अकेले ने लाखों के साथ लड़ना है! आओ अरदास करें और इस कठिन परीक्षा में से सफलता प्राप्त करें!'' फिर योजनाबद्ध ढंग के साथ हवेली की चारों भुजाओं पर आठ-आठ सिंघ मोर्चे बना कर बैठा दिए। दो सिंघ हवेली में घूम कर पहरा देने के लिए, दो सिंघ हवेली के मुख्य दरवाज़े पर पहरा देने के लिए नियत कर खुद शेष सिंघों व साहिबज़ादों सहित ऊपरी छत पर डट गए। सिंघों और गुरु साहिब द्वारा शत्रु-दल की फौज को हवेली के निकट पहुँचने से पहले ही तीरों एवं गोलियों से बेध दिया जाता। अगर कोई बच कर हवेली को सीढ़ी लगा कर चढ़ने की कोशिश करता, तो वह भी पार बुला दिया जाता। अपनी फौज, अपने जरनैलों का सफाया होता देख कर दुश्मन फौज एकदम भड़की और हवेली का दरवाज़ा तोड़ने लगी। पहरेदार सिंघों ने गुरु जी की आज्ञा लेकर दरवाज़ा खोला। चारों सिंघ शत्रु-दल के साथ लोहा लेते हुए शहीद हो गए। गुरु के प्यारे सिंघों ने विनती की, ''पातशाह जी! आप साहिबज़ादों को लेकर यहाँ से चले जाओ!'' मेरे प्रीतम-प्यारे ने मुस्करा कर कहा, ''कौन-से साहिबज़ादों की बात करते हो? आप सभी मेरे साहिबज़ादे हो।'' साहिब के साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी ने सतिगुरु जी के चरणों पर शीश रखा। मेरे पातशाह ने साहिबज़ादे को आशीर्वाद देते हुए पूछा, ''पुत्र! क्या बात है?''

''पिता जी! मुझे भी आज्ञा दो! मैं भी रण में जाकर दुश्मन से लोहा लेना चाहता हूं। मेरी तमन्ना है कि मैं भी शत्रु-दल का नाश करूं।''

मेरे साहिब ने साहिबज़ादे को सीने से लगा कर माथा चूमा और रण में जाने की आज्ञा दी। साहिबज़ादे के जंग के मैदान में जाने से विरोधियों में खलबली मच गई। मुग़ल फौज अली-अली करती हुई पीछे हटने लगी। वजीर खान अपनी फ़ौज को डाँटने लगा। फिर एक बड़े हजूम ने बाबा अजीत सिंघ जी को आ घेरा। आप हज़ारों फौज को मारते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। गुरु-पिता ने साहिबज़ादे को शहीद होता देख कर शीश झुकाया और परमात्मा का शुक्र अदा किया, ''हे अकाल

पुरख ! शुक्र है आपने मुझे अजीत सिंघ जैसा पुत्र दिया, जिसने दीन-धर्म की रक्षा हेतु शहीद होकर मुझे गौरवान्वित किया है।''

दूसरी तरफ साहिब के दूसरे साहिबज़ादे बाबा जुझार सिंघ जी दोनों हाथ जोड़ कर सतिगुरु जी के पास विनती करने लगे, ''पिता जी! मैं भी बड़े भाई की तरह कौशल दिखाना चाहता हूं। आप जी की कृपा से मैं अपने दादा (श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी), परदादा (श्री गुरु अरजन देव जी) के नाम को लाज नहीं लगने दूंगा।''

दातार पिता जी ने कहा, ''मेरे लाल जी! मैं तो इसी समय का इन्तज़ार कर रहा था कि मैं शहीद पिता का पुत्र होकर शहीद पुत्रों का पिता भी कहलवाऊं!'' साहिब ने साहिबज़ादे को बड़े प्यार के साथ रण हेतु भेजा।

बाबा जुझार सिंघ जी लगे जंग के मैदान में कौशल दिखाने। एक तरफ़ शत्रु-दल की लाखों की संख्या में फौज और दूसरी तरफ़ गुरु जी का नन्हा शेर, जो शत्रु-दल पर अकेला ही भारी पड़ रहा था। लाशों के ढेर बिछा कर शत्रु-दल के घेरे में आ गया। फिर भी साहिब के साहिबज़ादे ने इतनी बहादुरी दिखाई कि दुश्मन द्वारा उसे शहीद करने में पसीने छूट गए।

साहिब के दोनों साहिबज़ादे एक के बाद एक साहिब की आँखों के सामने शहीद हो गए, परन्तु साहिब की आँखों में एक आँसू नहीं आया, शरीर भी नहीं थरथराया, बल्कि प्रभु में ध्यान जोड़े विनती कर रहे हैं :

-कबीर मेरा मुझ महि किछु नही
जो किछु है सो तेरा॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा॥

(पन्ना १३७५)

— तेरा कीआ मीठा लागै॥ (पन्ना ३९४)

दातार पिता अब स्वयं जंग के मैदान में जाने लगे तो सिंघों ने विनती कर रोक लिया। गुरु-पंथ की विनती स्वीकार करते हुए दशमेश पिता भाई संगत सिंघ जी के सिर पर कलगी/ तोड़ा सजा कर तीन सिंघों— भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी को साथ लेकर चमकौर की गढ़ी में से बाहर निकल गए।

छोटे साहिबज़ादों— बाबा जोरावार सिंघ जी तथा बाबा फतहि सिंघ जी और माता गुजरी जी को गंगू के अपने घर गाँव सहेड़ी (खेड़ी) ले जाकर रात के समय लालचवश माता जी के सिरहाने रखी धन-जवाहरात वाली थैली चुरा ली। माता जी के पूछने पर वह कहने लगा, ''आप मुझे ही चोर बना रहे हैं!''

गंगू भड़क कर कमरे में से बाहर आया और माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादों को अंदर बंद कर दिया। उसकी पत्नी और माँ ने उसे यह कुकृत्य करने से बहुत रोका, मगर

वह धन के लालच में आकर अंधा-सा बन गया था। गंगू ने सोचा कि माता जी के धन-जवाहरात तो हाथ आ गए हैं, अब सरकार से ईनाम भी प्राप्त कर लूँ। वह धन के लालच में अंधा हुआ गाँव के चौधरी को साथ लेकर मोरिंडा थाने जा पहुँचा और कहने लगा :

मैं देऊंगा गुर पुत्र फड़वाइ।
मैनो दिउ इनाम दिवाइ।

मोरिंडा के हाकिमों— जानी खान और मानी खान ने गंगू को घर से माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों के अमृत वेले जा पकड़ा। जब सिपाही इन्हें बंदी बनाकर ले जाने लगे तो गंगू की पत्नी, माँ तथा धर्मी लोगों ने इसे रोका, फटकारा और बद-दुआएं दीं।

माता गुजरी जी और साहिब के छोटे साहिबज़ादे— बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी को सरहिंद के नवाब वजीर खान के पास पहुँचा दिया। उसने माता जी और छोटे साहिबज़ादों को ठंडे बुर्ज में कैद करने के लिए हुक्म दिया। जहाँ चमकौर साहिब की जंग हारने के कारण वजीर खान काफी क्रोध में था, वहीं अब उसे साहिब के छोटे साहिबज़ादों और माता जी के अपनी हिरासत में होने के कारण प्रसन्नता हो रही थी।

इधर माता जी साहिबज़ादों से कह रहे थे, ''पुत्र जी! मुझे पता है, तुम उस महान आत्मा (श्री गुरु अरजन देव जी) की वंशज हो, जो धर्म की ख़ातिर ज़ालिमों के हाथों अनेक कष्ट सहते हुए शहीद हो गए। तुम उस दादा (श्री गुरु तेग बहादर जी) के पोते हो जिन्होंने धर्म हेतु शीश दे दिया, मगर धर्म-परिवर्तन की बात स्वीकार नहीं की। आप उस पिता के पुत्र हो, जिसने बर्बरता को रोकने के लिए छोटी आयु में ही अपने पिता जी को कुर्बानी के लिए भेजा था। पुत्र जी! तुम पर भी श्री गुरु नानक देव जी की कृपा है। तुमने अमृत की दात हासिल की है। तुम कभी भी अपने धर्म-ईमान से विचलित मत होना। पुत्र जी! अगर मन में कोई हलचल होने लगे तो गुरबाणी का जाप करना और पूर्वजों की शहीदी को याद करना, गुरु भली करेगा!'' माता गुजरी जी की गोद में बैठे लाल प्यारे कहने लगे, ''धंन भाग हमारे हैं माई। धरम हेति तन जेकर जाई।'' इस प्रकार की बातें करते हुए बुज़ुर्ग शरीर का प्यार, स्नेह प्राप्त करते हुए छोटे साहिबज़ादे माता गुजरी जी की गोद में ही सो गए। अमृत वेला होने पर माता गुजरी जी नाम-चिंतन में लीन हो गए।

वज़ीर खान को भी रात भर नींद नहीं आई। उसने सूर्योदय होते ही सुच्चा नंद के नेतृत्व में दो सिपाहियों को हुक्म किया कि साहिबज़ादों को लाकर कचहरी में पेश किया जाए। जब सिपाहियों ने ठंडे बुर्ज में जाकर माता गुजरी जी को नवाब के हुक्म के बारे में

बताया तो माता गुजरी जी ने साहिबज़ादों को जगाया और सिपाहियों के साथ भेजने से पहले प्यार के साथ तैयार करते हुए कहने लगे :

जाने से पहले आओ, गले से लगा तो लूं।
केसों को कंघी कर दूं, ज़रा मुँह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्हीं सी, कलगी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुम को, दूल्हा बना तो लूं॥७२।
(शहीदानि-वफ़ा)

प्रसन्नचित्त साहिबज़ादे सिपाहियों के साथ जाने लगे तो माता गुजरी जी मीठी आवाज़ में बोले, *''सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥''* यह सुन कर साहिबज़ादों ने दाहिने हाथ ऊपर उठा कर कहा, *''पुरज़ा पुरज़ा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥''*

रास्ते में जाते हुए सुच्चा नंद दीवान तथा सिपाहियों ने साहिबजादों से कहा कि ''बच्चो! तुम सूबेदार वज़ीर खान की कचहरी/ दरबार में जा रहे हो। जाते ही सिर झुका कर 'सलामा लैकम' कहना।'' कचहरी में पैर रखते ही गुरु-पिता जी के शेरों ने गरजती आवाज़ में ''वाहिगुरु जी का खालसा॥ वाहिगुरु जी की फतह॥'' बुलाई। कचहरी में बैठे सभी जन हक्के-बक्के रह गए। नवाब अपना अनादर होता देख कर सिपाहियों को डांटने लगा— कमबख्तो! तुम्हें पता नहीं, किसी भी मुलज़िम को पेश करने से पहले उसे कचहरी में कैसे पेश आना है, इसके बारे में बताना है।'' साहिबज़ादा बाबा जोरावर सिंघ जी बोले, ''इन बेचारों ने तो हमारे साथ बहुत माथापच्ची की, लेकिन हमारा सिर तो केवल एक अकाल पुरख के आगे ही झुकता है, प्रत्येक के आगे नहीं।''

वजीर खान कहने लगा, ''बच्चा जी! तुम्हारे पिता और दोनों भाई मार दिए गए हैं। केवल तुम्हीं बचे हो! इसलाम कबूल करो! खाओ, पीओ, ऐश करो! तुम्हारे निकाह मुग़ल जरनैलों की सुंदर कन्याओं के साथ किये जाएंगे! सिक्खी तो हमने वैसे भी ख़त्म कर देनी है। और अगर तुम इसलाम कबूल नहीं करोगे तो मार दिए जाओगे।'' साहिबज़ादे उसके कुफ्र को सुन कर मुस्करा रहे थे। वज़ीर खान समझता था कि शायद ये साहिबजादे मेरी बात मानने को तैयार हो गए हैं।

उसके चुप होते ही बाबा जोरावर सिंघ जी कड़क कर बोले, ''ओए सूबे! सुन! सिक्खी हमें जान से भी ज्यादा प्यारी है। तेरा कोई भी भय या कपट हमें हमारे इरादे से गिरा नहीं सकता। रही बात पिता जी की, उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हम अपने धर्म-ईमान के लिए मरने को तैयार हैं। हमारे बुज़ुर्गों ने समझाया है कि :

जो सूरा तिस ही होइ मरणा॥

जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ (पन्ना १०१९)

वजीर खान और अन्य दरबारी साहिबज़ादों की दृढ़ता व हिम्मत देख कर एकदम शांत हो गए। दुष्ट सुच्चा नंद ने इस सन्नाटे को चीरते हुए कहा, ''इन्हें छोटे मत समझो! ये साँप के बच्चे हैं! तरस करने के लायक नहीं हैं,! इन्हें खत्म कर देना ही उचित है।''

फिलहाल वज़ीर खान ने साहिबज़ादों को दादी माँ के पास भेज दिया और कहा, ''कल अपनी दादी माँ के साथ परामर्श कर हमारी बातों पर गौर करके आना।''

माता गुजरी जी साहिबज़ादों के चहकते हुए नूरानी चेहरे देख कर अति प्रसन्न हुए। साहिबजादों ने माता जी को कचहरी में हुई एक-एक बात बतायी। माता जी ने शाबाश दी और प्रभु का लाख-लाख शुक्राना किया।

दूसरे दिन साहिबज़ादों को फिर कचहरी में पेश करने का हुक्म हुआ। आज कचहरी के मुख्य द्वार से नहीं, बल्कि छोटी-सी खिड़की के माध्यम से प्रवेश करने की तजवीज़ बनाई गई, ताकि जब साहिबजादे कचहरी में दाखिल होंगे तब खुद-ब-खुद सिर झुका कर प्रवेश करेंगे। साहिबजादे किसी से कम नहीं थे। साहिबजादों ने खिड़की के माध्यम से पहले कचहरी में पैर रखे, ताकि उनकी गर्दन न झुके। नवाब और उसके दरबारियों ने फिर डराने-धमकाने की कोशिश करते हुए राजभाग देने के लालच दिए।

नवाब बनावटी हँसी हँसते हुए कहने लगा, ''अच्छा बच्चो! अगर हम तुम्हें छोड़ दें तो तुम क्या करोगे?'' बाबा जोरावर सिंघ जी बोले, ''करना क्या है! हम बड़े होकर सिक्खों को इकठ्ठा करेंगे और तुम्हारे जैसे ज़ालिमों के ज़ुल्म को ख़त्म करने के लिए तब तक लड़ेंगे, जब तक ज़ालिमों का सर्वनाश न हो जाए।''

वजीर खान ने क्रोध में आकर काज़ी को साहिबज़ादों के उनके अपराध के मुताबिक सजा सुनाने के लिए तुरंत फ़ैसला देने के लिए कहा। काज़ी ने बताया कि ''इसलाम धर्म मासूम बच्चों को उनके बाप के किए की सजा देने की इजाज़त नहीं देता।''

दीवान सुच्चा नंद ने जलती आग पर तेल डालने का काम किया और कहा ''जनाब! अगर ये बच्चे आज दरबार में इतनी आग उगल सकते हैं तो बड़े होकर अवश्य हुकूमत के लिए मुसीबत बनेंगे। वजीर खान ने अपने निकट बैठे मालेरकोटला के नवाब से कहा :

तुमरो मारयो गुर नाहर खां भाई।
उस बेटे तुम देहु मरवाई ॥२४॥
परन्तु आगे से जवाब मिला :
शेर मुहंमद नहि गनी, बोलयो सीस हिलाइ ॥
हम मारैं शीर खोरिआं जग मैं औजस आइ ॥२५॥ *(प्राचीन पंथ प्रकाश)*

वैसे भी :

बदला ही लेना होगा तो, हम लेंगे बाप से।
महफूज़ रखे हमको खुदा, ऐसे पाप से।
(शहीदानि-वफ़ा)

कचहरी की कार्यवाही अगले दिन पर डालते हुए छोटे साहिबज़ादों को फिर दादी माँ माता गुजरी जी के पास ठंडे बुर्ज में भेज दिया गया।

माता गुजरी जी गुरु के शेरों से बड़ी दृढ़ता व हिम्मत भरी बातें सुन कर अति प्रसन्न होते और साहिबज़ादों का शीश चूमते हुए उन्हें गुरु-उपदेशों से अवगत करवा कर धर्मी फौलाद में ढालते। *''काज़ी होए रिसवती वढी लै कै हकु गवाई॥''* वारिस शाह भी लिखता है कि :

खाण वड्ढीआं नित्त ईमान वेचण,
इहो बाण है काजीआं सारिआं नूं।

नवाब के हुक्मानुसार साहिबज़ादों को तीसरे दिन कचहरी में पेश किया गया। सूबे सरहिंद ने नाटकीय ढंग के साथ अपने ख़रीदे हुए काज़ी को दोबारा फ़ैसला सुनाने के लिए कहा। धर्म-ईमान को ताक पर रख कर अपने मालिक नवाब का इशारा समझ कर काज़ी ने फ़ैसला सुनाया, ''दोनों बच्चों को कलमा-ए-मुहम्मदी पढ़ने के लिए कहा जाये! यदि ये न मानें तो इन्हें भूखे-प्यासे रख कर दीवारों में चिना कर जिबह किया जाये!''

साहिबज़ादों को इसलाम धर्म कबूल करने के लिए फिर डराया-धमकाया गया और राज-सत्ता के साथ-साथ सुंदरियों की डोली आदि देने के लालच भी दिए गए। साहिब के साहिबज़ादे गरजती आवाज़ में बोले :

जुत्ती दी इक ठोकर ला के,
ताज-तख़त ठुकरा सकदे हां।
कंधां विच चिणवा के आपां,
रोम-रोम मुसकरा सकदे हां।

ओए सूबे! तुझे ही नहीं, बल्कि सबको पता है कि :

हमरे बंस रीति इम आई।
सीस देति पर धरम न जाई।

काज़ी के फ़ैसले को सुन कर दानिशमंदो-धर्मियों ने मुँह में उंगली डाल ली। नवाब शेर मुहम्मद खान ने उठ कर कहा, ''अल्लाह का वास्ता है, इन मासूम बच्चों पर रहम किया जाए!'' जब उसकी आवाज़ को अनसुना किया गया तो वह और अन्य धर्मी पुरुष उठ कर कचहरी में से बाहर चले गए। साहिबज़ादों को दीवारों में जिंदा चिना जाने लगा :

गोडिआं तोड़ी कंध जो आई।
चिणदे जावन तुरक कसाई।
जाइ बजीदे फेर उचारा।
हुण बी मंनो हुइ छुटकारा। *(पंथ प्रकाश)*

अडिग गुरु के शेरों ने बताया कि धन्य

गुरु नानक पातशाह जी का उपदेश है :

मरणु मुणसा सूरिआ हकु है
जो होइ मरनि परवाणो ॥
सूरे सेई आगै आखीअहि
दरगह पावहि साची माणो ॥ (पन्ना ५७९)

दीवारों की घुटन में आकर साहिबज़ादे बेहोश होकर गिर गए। दीवारें भी गिर गईं। ईंटें ऊपर गिरने से उनके मासूम शरीरों पर चोटें भी आईं। ख़ून बहने लगा।

दूसरी तरफ वज़ीर खान की कचहरी में समाणा गाँव के दो जल्लाद साशल बेग और बाशल बेग अपने किसी मुकद्दमे की पेशी भुगतने के लिए आए थे। उनके आगे शर्त रखी गई कि ''अगर तुम लोग इन बच्चों को जिबह कर दो तो तुम्हारे मुकद्दमे का निपटारा तुरंत हो जायेगा।'' वे तो पहले से ही ऐसे मौके की तलाश में थे :

तड़प तड़प गई जिंद उडाइ।
इम शीर खोर दुइ दए कतलाइ।

(प्राचीन पंथ प्रकाश)

ज़ालिमों ने साहिब के साहिबज़ादे छुरियों से खोद कर शहीद कर दिए। यह कहर १३ पौष, संवत् १७६१ विक्रमी को बरसा।

इस अमानवीय अत्याचार को सुन कर धर्मी लोग भीतर ही भीतर बहुत रोए। हाकिमों को फटकारा और बद-दुआएं दीं।

गुरु-घर का सिक्ख दीवान टोडर मल्ल सरकारी कर्मचारी होने के साथ-साथ एक सेठ भी था, जिस कारण उसका काफ़ी प्रभाव था। उसने अपने मन से हुकूमत का भय निकाल कर नवाब से साहिबज़ादों का दाह-संस्कार करने की आज्ञा माँगी और वज़ीर खान की शर्त को स्वीकार करते हुए दाह-संस्कार करने वाली जगह को अशरफियां बिछा कर ख़रीदा। जब दीवान टोडर मल्ल को और बाबा मोती राम महिरा ने साहिबज़ादों के शहीद होने की ख़बर माता गुजरी जी को बताई तो माता जी दोनों हाथ जोड़ कर प्रभु-प्यारे के आगे सिक्खी आस्था निभ जाने का शुक्राना करते हुए परलोक गमन कर गए।

जब वजीर खान को पता चला कि मेरी कैद में आए कैदियों को लंगर छकाने वाले कर्मचारी बाबा मोती राम महिरा तीन रात ठंडे बुर्ज के पहरेदारों को रिश्वत देकर माता गुजरी जी और साहिबज़ादों को दूध पिलाते रहे हैं तो उसने तुरंत हुक्म देकर बाबा मोती राम महिरा को परिवार सहित कोहलू में पेर कर शहीद कर दिया।

महान शहीद बड़े साहिबजादे

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को 'सरबंस दानी' कहा जाता है अर्थात् आपने अपने सारे वंश को मानवता की रक्षा के लिए शहीद करवा दिया था। आपके पिता नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कश्मीरी पंडितों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा हेतु दिल्ली के चाँदनी चौक में शीश कटा कर शहादत दी। जहांगीर की कट्टर धार्मिक नीतियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए शहादत देने वाले पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी आपके परदादा थे। यही नहीं, दशमेश पिता ने अपने चारों साहिबजादों को भी देश और धर्म के लिए अर्पित कर दिया। एक ही परिवार में शहीदों की इतनी लंबी परंपरा की दुनिया में यही एकमात्र मिसाल है।

बाबा अजीत सिंघ जी : दशमेश पिता के चार साहिबज़ादों में सबसे बड़े थे— बाबा अजीत सिंघ जी। इनका जन्म २३ माघ, संवत् १७४३ विक्रमी अर्थात् ७ जनवरी, सन् १६८७ ईस्वी को हुआ। उन्हीं दिनों भंगाणी के युद्ध में सिक्खों को बड़ी विजय प्राप्त हुई थी। गुरु जी ने इस विजय को यादगारी बनाने के लिए साहिबजादे का नाम रखा— बाबा अजीत सिंघ जी। गुरु जी की अभिलाषा थी कि सिक्ख हमेशा अजीत (अजेय) ही बने रहें।

बाबा जुझार सिंघ जी : दशमेश पिता के दूसरे साहिबज़ादे थे— बाबा जुझार सिंघ जी। इनका जन्म संवत् १७४७ विक्रमी (सन् १६९० ईस्वी) में हुआ। सिक्खों की जुझारू प्रवृत्ति के प्रतीक के रूप में गुरु जी ने साहिबजादे का नाम रखा— बाबा जुझार सिंघ जी।

लालन-पालन व शिक्षा-दीक्षा : साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी का लालन-पालन गुरु-पिता की देखरेख में आरंभ हुआ। शास्त्र-अध्ययन और शस्त्र-संचालन का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर दोनों साहिबजादे विद्वान एवं कुशल योद्धा के रूप में विकसित हुए।

अमृत-पान और अमृत-प्रचार में विशेष सेवा : खालसा साजना के समय सन् १६९९ ईस्वी की वैसाखी वाले दिन दोनों साहिबजादों ने अमृत छका और सिंघ सज गये। बाद में दोनों साहिबजादे अमृत-प्रचार में भी विशेष भूमिका निभाते रहे :

देह खंडे की पाहुल तेज बढाइआ।
जोरावर करि सिंघ, हुकम वरताइआ।
(श्री गुरु सोभा कृत कवि सैनापति, अध्याय ५)

श्री अनंदपुर साहिब से बिछोड़ा और परिवार-बिछोड़ा : श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय जब दशमेश पिता ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा और सरसा नदी के किनारे परिवार-बिछोड़ा

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

हुआ तो साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी दोनों गुरु-पिता के साथ थे।

आप सभी गिनती के ४० सिक्खों के साथ चमकौर साहिब में भाई बुधीचंद की हवेली में जा पहुंचे। पीछा कर रही शत्रु-सेना ने हवेली को चारों तरफ से घेर लिया। इस स्थान पर सन् १७०४ ईस्वी को दस लाख की मुगल फौज और गिनती के ४० सिक्खों के बीच जो भयानक युद्ध लड़ा गया, वह 'चमकौर का युद्ध' कहलाता है। यह मानव इतिहास की सबसे अद्भुत लड़ाइयों में से एक है।

साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी की शहादत : युद्ध में पांच-पांच सिक्ख जत्थे बनाकर निकलते थे और लाखों की तादाद वाली दुश्मन की फौज से जूझते हुए शहीद हो जाते थे।

सिक्खों को इस तरह शहीद होता देख साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने पिता-गुरु से रण-भूमि में जाने की आज्ञा मांगी। पिता-गुरु ने आज्ञा दे दी। साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी पांच सिंघों— भाई मोहकम सिंघ (पाँच प्यारों में से एक), भाई ईशर सिंघ, भाई लाल सिंघ, भाई नंद सिंघ और भाई केसर सिंघ को साथ ले चमकौर साहिब की गढ़ी से बाहर निकले और शत्रु पर टूट पड़े।

साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी के पराक्रम से मुगल फौज़ में हाहाकार मच गया :

लेत परोइ पठान को, सब हन सांग दिखलाब।
देखत ही सब करत है, अरे खुदाइ ! खुदाइ !!
(श्री गुरु सोभा कृत कवि सैनापति, अध्याय १२)

पांच सिक्खों के साथ लाखों की फौज़ से कब तक मुकाबला किया जा सकता था! आख़िर पांचों सिंघों और साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने अनगिनत शत्रुओं को मौत के घाट उतारते हुए शहादत प्राप्त की।

इस प्रकार ७ पौष, संवत् १७६१ विक्रमी को साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी मात्र १७ वर्ष की आयु में शहीद हो गए।

सुपुत्र की शहीदी के विषय में सुनकर दशमेश पिता ने अकाल पुरख का शुक्राना किया।

साहिबजादा बाबा जुझार सिंघ जी की शहादत : बड़े भाई के शहीद होने के बाद साहिबजादा बाबा जुझार सिंघ जी ने भी पिता-गुरु से युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी।

मात्र १४ वर्ष की आयु में साहिबजादा बाबा जुझार सिंघ जी ने युद्ध-कौशल के आश्चर्यजनक करतब दिखाए :

जब देखयो जुझार सिंघ, समा पहूचयो आन।
दौरयो दल मै धाइ कै, कर मै गही कमान।
(श्री गुरु सोभा कृत सवि सैनापति, अध्याय १२)

महान वीरता का प्रदर्शन करते हुए अनगिनत शत्रुओं को मौत के घाट उतारते हुए साहिबजादा बाबा जुझार सिंघ जी भी शहीद हो गए।

साहिबजादों की शहादत पर दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अकाल पुरख का बार-बार शुक्राना किया :

आज खास भए खालसा,
सतिगुरु कै दरबार। (श्री गुरु सोभा कृत कवि सैनापति, अध्याय १२)

अमर शहीद भाई जीवन सिंघ जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

गुरु-घर के प्रति भाई जीवन सिंघ जी (भाई जैता जी) के परिवार के प्यार, समर्पण, त्याग, श्रद्धा, सेवा का इतिहास काफी लंबा रहा है। उनका परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-घर के प्रति आस्थावान व प्रीतिवान रहा है। सिक्ख इतिहास में धर्म, न्याय, मानवता के लिए कुर्बानी देने वाला हर शूरवीर, योद्धा, बहादुर सिंघ महान है, सम्मान का पात्र है। भाई जीवन सिंघ जी के पूर्वज भाई कलिआणा जी, जो बाबा बुड्ढा जी के समकालीन थे, द्वारा श्री गुरु नानक देव जी के समय से की जाती नि:स्वार्थ सेवा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती हुई श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय तक लगभग २३५ वर्ष तक दृष्टिगोचर होती है।

भाई जीवन सिंघ जी का जन्म १३ दिसंबर, सन् १६६१ ई. को भाई सदानंद जी तथा माता प्रेमो जी के गृह पटना साहिब में हुआ। यह परिवार नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के परिवार के साथ पटना साहिब में निवास करता रहा।

भाई जी के परिवार की गुरु-घर के साथ निकटता इतनी घनिष्ठ थी कि भाई सदानंद जी धर्म प्रचार-यात्राओं के दौरान श्री गुरु तेग बहादर साहिब के साथ ही रहते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश के उपरांत जब गुरु-परिवार पटना साहिब से श्री अनंदपुर साहिब आ बसा, तब भाई जीवन सिंघ जी का परिवार भी साथ ही आ गया था।

भाई जीवन सिंघ जी पुरोहितों व धर्म के ठेकेदारों द्वारा स्थापित की गई वर्ण-व्यवस्था के अनुसार तथाकथित दलित वर्ग 'मज़हबी' वर्ग से संबंधित थे। उन्होंने अपनी सेवा-भावना, समर्पण, शौर्य, अदम्य साहस और कुर्बानी से तथाकथित ऊँची जाति के अभिमानियों, अहंकारियों तथा कट्टरवादियों को पराजित कर दिया, उन्हें बौना साबित कर दिया। वे अपने सभी परिजनों की भांति श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सच्चे श्रद्धालु थे।

जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को बाबा बकाला साहिब में भाई मक्खण शाह जी ने पा लिया, तब भाई जीवन सिंघ जी वहां पर आए। एक अरसे के बाद गुरु जी के पुन: दर्शन-दीदार कर अति प्रसन्न हुए। फिर वे सदैव के लिए गुरु जी के ही हो लिए।

जब नवम् पातशाह श्री अनंदपुर साहिब से चलकर पंजाब का धर्म-प्रचार-भ्रमण करते हुए दिल्ली रवाना हुए, तब बड़ी संख्या में सिक्ख संगत उनके साथ चल रही थी। भाई जीवन सिंघ जी भी साथ ही चल रहे थे। उनमें गुरु जी के दर्शन करते

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

रहने की और दीवान में गुरबाणी-उपदेश सुनने की अभिलाषा इतनी तीव्र थी कि भोजन-पानी ग्रहण करने की भी सुध न रहती।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भाई जीवन सिंघ जी सहित शेष सिक्ख संगत को वापिस भेज दिया और तीन सिक्खों को साथ लेकर आगरा पहुंचे। उन्हें वहां पर से गिरफ्तार कर दिल्ली लाया गया। सरकार के प्रमुख लोग एवं मौलाना उन्हें अधीनता स्वीकार करने को मनाने लगे, अपनी बात मनवाने की जिद करने लगे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपने निश्चय व निर्णय पर अडिग रहे। उन्हें सत्य की जीत पर विश्वास था। अपने शुभ वचनों व तर्कों द्वारा गुरु जी ने कट्टरपंथी ज़ालिमों, घमंडियों, अहंकारियों, क्रूर शासकों को निरुत्तर कर दिया। फिर पराजित व तिलमिलाई नापाक एवं निकृष्ट सरकार ने उनके साथी भाई मतीदास जी को और बाद में भाई सतीदास जी व भाई दिआला जी को यातनाएं देकर शहीद कर दिया। इन शहीदों के उपरांत धर्म की चादर श्री गुरु तेग बहादर साहिब को ११ नवंबर, सन् १६७५ ई. को दिल्ली के चांदनी चौक में शहीद कर दिया गया।

ज़ालिम व निर्दयी हाकिमों ने गुरु जी के पावन शीश व धड़ (शरीर) को चांदनी चौक में ही पड़ा रहने दिया। उनका इरादा था कि दूसरे दिन शरीर को दिल्ली दरवाज़े पर लटका दिया जाएगा। उन्हें घमंड था कि उन्होंने इतना डर फैला दिया है कि अब कोई गुरु जी का शरीर उठाने की जुर्रत नहीं कर सकता। उसी दिन ज़ोरदार आंधी भी चली। शासक खुश हो रहे थे कि उन्होंने अपने एक बड़े विरोधी को खत्म कर दिया है और अब सिक्खों में उनकी दहशत काफी अधिक बढ़ जाएगी।

गुरु जी की शहादत के समय भाई जीवन सिंघ जी दिल्ली में थे। उन्होंने गुरु जी का पावन शीश अन्य सिक्ख साथियों की सहायता से उठा लिया। अति सम्मान व श्रद्धा से सिर झुकाकर अपने गुरु के शीश को प्रणाम किया और कपड़े में लपेट कर चल दिए। शेष शरीर (धड़) को भाई लक्खी शाह वणजारा अपने घर ले गए। वहां अपने घर में रखकर पूरे घर को अग्नि-भेंट कर दिया। गुरु जी के जांबाज़ सिक्खों ने अपनी हिम्मत व जिंदादिली से सरकारी चुनौती की धज्जियां उड़ाकर रख दीं।

जब भाई जीवन सिंघ जी लंबे रास्ते की अनेक दुश्वारियां सहते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब का पावन शीश लेकर श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे, तब अपने गुरुदेव पिता जी का शीश प्राप्त कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें अपने गले से लगाते हुए आशीर्वाद दिया, ''रंघरेटा! गुरु का बेटा!!'' उसी दिन से भाई जीवन सिंघ जी दशम पातशाह जी के पास श्री अनंदपुर साहिब में ही रहने लगे। जब गुरु जी श्री पाउंटा साहिब चले आए, तब भाई जी भी उनके साथ चले आए।

सन् १६९९ ई. में वैसाखी के दिवस श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दुनिया के अद्‌भुत एवं एक नए पंथ 'खालसा पंथ' की साजना की और अमृत की अमूल्य दात बख्शिश कर सिक्खों को सिंघों के शानदार स्वरूप में सजाना शुरू कर दिया। भाई

जैता जी ने भी अमृत-पान किया और भाई जीवन सिंघ जी बन गए। वे अति सुंदर, ऊंचे कद के, अच्छी डील-डौल वाले दर्शनी सिंघ थे।

सन् १७०१ ई. में श्री अनंदपुर साहिब पर दुश्मन-सेनाओं द्वारा आक्रमण कर दिया गया। इस आक्रमण में दिल्ली से आई गश्ती फौज, लाहौर व सरहिंद के सूबेदार की फौज तथा बाईधार के हिंदू राजाओं की फौज शामिल थी। लगातार तीन वर्ष तक युद्ध जारी रहा और इस अरसे के दौरान गुरु जी के आशीर्वाद से जूझने वाले सिक्ख योद्धाओं में भाई जीवन सिंघ जी भी शामिल थे।

श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सरसा नदी को पार किया और श्री चमकौर साहिब में पड़ाव किया। यहां पर पुनः आक्रमण करने वाली शाही फौज के साथ घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में बहुत ही कम संख्या में सिंघ शूरवीर गुरु साहिब जी के साथ थे। वे छोटे-छोटे जत्थों के रूप में मैदान-ए-जंग में जूझने के लिए आते और दुश्मनों को भारी क्षति पहुंचाकर शहादत प्राप्त करते हुए अकाल पुरख के चरणों में पहुंच जाते। गुरु साहिब जी के दोनों बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी दुश्मनों को नाकों चने चबवाते हुए इसी युद्ध में शहीद हुए थे। आजकल के सिक्ख युवाओं एवं बालकों को चारों साहिबज़ादों के अदम्य साहस, हौसले, दृढ़ता, जज्बे तथा जोश से प्रेरणा व आगवानी लेते हुए सिक्ख धर्म के विरोधियों एवं मानवता विरोधी अन्यायकारियों की कुटिल चालों का मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए। आजकल कई षड्यंत्रकारी सिक्ख धर्म के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं। उनकी नीतियों को हर हाल में नाकाम करना है और चढ़दी कला में रहना है।

भाई जीवन सिंघ जी ने भी युद्ध में अपने युद्ध-कौशल और शूरवीरता का कमाल दिखाया था। वे दुश्मनों पर बिजली बन टूट पड़े और उनकी घेराबंदी को तोड़ते हुए दूर तक निकल गए। सारी शाही फौज़ में त्राहिमाम मचा दिया। अनेक वारों को एक ही समय पर रोकते तथा जवाब में जबरदस्त हमला बोलते। वे अपनी दोनों बंदूकें— नागनी व बागनी एक ही समय में कंधों से सटाकर इकट्ठी चलाते थे और इसी तरह दो कृपाणों को दोनों हाथों में थामकर एक साथ ही चलाते थे। आखिर जूझते हुए और दुश्मनों को नेस्तनाबूद करते हुए भाई जीवन सिंघ जी शहीद हो गए।

सिक्ख इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर उनके द्वारा दिखाए गए कारनामों को और अंत में उनके द्वारा दी गई शहादत को सुनहरी अक्षरों में अंकित किया गया है।

शहीद भाई संगत सिंघ जी

*– जनाब बशीर मुहम्मद**

वे मनुष्य भाग्यशाली होते हैं जिन पर वाहिगुरु की कृपा होती है। इस अवस्था के लिए श्रद्धालु को भी अपना आप गुरु को सौंपना पड़ता है, शबद-गुरु के अधीन होना पड़ता है। इसकी मिसाल अनेक सिंघों ने दी है। इनमें से ही एक योद्धा भाई संगत सिंघ जी हुए हैं। बाल अवस्था में ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई संगत सिंघ जी पर कृपा-दृष्टि का पवित्र प्रभाव डाला और वे उम्र भर गुरु जी की नज़रों से दूर न गए। पटना साहिब की गलियों में भाई संगत सिंघ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ सारा दिन इकठ्ठा खेलते रहते। भाई संगत सिंघ जी का जन्म २५ अप्रैल, १६६७ ई. को भाई रणीआ जी तथा माता अमरो जी के घर हुआ। आप जी का नाम 'संगता' रखा गया। आप हमेशा गुरु जी के संग रहे।

भाई संगत सिंघ जी की पृष्टभूमि जलंधर-फगवाड़ा के निकट गाँव खेड़ी से संबंधित है। जब गुरु जी ने अमृत-पान करवाया था तो गाँव खेड़ी, सपरोड़, रुड़का खुर्द, थोथबां, जंडाली चक्क गुरु आदि गाँव की संगत ने बहुत योगदान दिया था। इस इलाके से जांबाज योद्धा पैदा हुए, जिन्होंने धर्म की ख़ातिर अपनी जान की भी परवाह नहीं की। आप शरीर और शक्ल से गुरु जी के साथ मिलते थे। कई बार गुरु जी ने भाई संगत सिंघ जी को परखा भी। माता गुजरी जी और (मामा) भाई किरपाल चंद जी को श्री गुरु तेग़ बहादर जी का संदेश आया कि वे श्री अनंदपुर साहिब लौटने की तैयारी करें। इनके साथ ही भाई रणीआ जी और माता अमरो जी भी पंजाब आने के लिए तैयार हो गए। जब पटना साहिब की संगत को पता चला कि माता गुजरी जी व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पंजाब जा रहे हैं तो संगत एकत्र होनी शुरू हो गई। गुरु-परिवार के जाने की खबर से सभी के चेहरे उदास थे। माता जी प्रत्येक को पुनः आने का ढारस बंधा रहे थे। इस जुदाई ने सारी संगत का मन भर दिया। माता गुजरी जी, (मामा) भाई किरपाल चंद जी, भाई रणीआ जी, माता अमरो जी और भाई संगत सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब लौट आए।

समय बीता। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब

**गांव-डाकखाना : झनेर, तहसील : मालेरकोटला, जिला : संगरूर (पंजाब)*

जी की शहादत के बाद सारी ज़िम्मेदारी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी निभाने लगे। हर दुख-सुख के समय भाई संगत सिंघ जी गुरु जी के साथ होते। १६९९ ई. की वैसाखी को गुरु जी ने विचित्र कार्य किया। खालसा पंथ की साजना की, रूहानी तौर पर जीवन परिवर्तित हुए, पूर्ण मनुष्य का आकार सामने आया। पाँच प्यारों सहित हज़ारों की संख्या में संगत ने अमृत-पान किया। भाई संगता जी अमृत-पान कर भाई संगत सिंघ जी सज गए। भाई रणीआ जी और माता अमरो जी क्रमशः भाई रण सिंघ जी और माता अमर कौर जी बन गए।

भाई संगत सिंघ जी पर गुरु जी का प्रभाव होना स्वाभाविक था। हर वक्त साथ ही रहते। भाई साहिब आज्ञाकारी, शांत-स्वभाव तथा सदा चढ़दी कला में रहने वाले थे। हर समय सेवा और सिमरन की इच्छा रखते थे। भाई संगत सिंघ जी ने कई जंगों में हिस्सा लिया। भाई साहिब शस्त्र चलाने के धनी थे और धार्मिक कार्यों में भी पूर्ण योगदान देते थे। आप जी की वाणी मीठी और रसभरी थी। वाणी में जोश और जज़्बा था। मन में संगत और गुरु जी के लिए अति स्नेह था। आप जी के प्रचार से प्रभावित होकर नौजवान श्री अनंदपुर साहिब शस्त्र लेकर भेंटा करने आते। संगत गुरु जी के ईश्वरीय वचन सुन कर सुहानी धरती श्री अनंदपुर साहिब में ही टिक जाती।

एक बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दुनियावी शिकायतों का निपटारा कर रहे थे तो एक पंडित रोता-कुरलाता हुआ आया और कहने लगा, ''गुरु जी! मेरी घरवाली (पंडिताईन) को एक पठान रोपड़ की तरफ ले गया है। उसे छुड़वाने का प्रयत्न करो जी!'' दीनदुनी के मालिक गुरु जी ने तुरंत भाई संगत सिंघ जी और साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी को हुक्म किया कि ''जाओ, उस महिला को छुड़ा कर लाओ!'' भाई संगत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी घोड़े पर सवार होकर हवा से बातें करते हुए सही ठिकाने पर पहुंच गए। दोनों ने जाकर पठान की हवेली का दरवाज़ा खटखटाया। अंदर से दरवाज़ा न खुला तो भाई संगत सिंघ जी और साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी दीवार फांद कर अंदर गए। दोनों ने पठान को जा दबोचा। अच्छी तरह से खातिरदारी करवा कर पठान मिन्नतें करने लगा और आगे से ऐसा न करने की कसम खाई। पठान की पत्नी सिंघों से पठान की जान की खैर मांग रही थी। सिंघ पंडिताईन को लेकर श्री अनंदपुर साहिब आ गए। पंडित बहुत खुश हुआ। गुरु- घर का शुक्राना किया।

भाई संगत सिंघ जी चुस्ती-फुर्ती वाले

कार्यों के लिए प्रसिद्ध थे। जब श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर जाते हुए खालसा फौज पर हमला हुआ, तो सिंघों ने डटकर मुकाबला किया। सरसा नदी के किनारे हुए युद्ध में सिंघों का काफ़ी नुकसान हुआ। कीमती सामान, बहुमूल्य ग्रंथ ग़ुम हो गए। माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे परिवार व संगी-साथियों से जुदा हो गए। गुरु जी के साथ दोनों बड़े साहिबज़ादे और कुछ सिंघ रोपड़ होते हुए चमकौर की गढ़ी की तरफ आ गए। गुरु जी ने इस गढ़ी में शरण ली। पीछा कर रही मुग़ल फ़ौज भी आ गई। नाहर खान मालेरकोटला मुगल फौज की तरफ से कमांडर था, जो पहले आ पहुंचा। गढ़ी को तीन तरफ से घेर लिया गया।

यह दुनिया की सबसे असमतोल जंग थी। एक तरफ कुल चालीस सिंघ, दूसरी तरफ़ लाखों की संख्या में मुगल फ़ौज, सभी सुविधायों से सुसज्जित। सिंघों ने वे कारनामे दिखाए जो अद्‌भुत थे। मर जाना, शहादत नहीं होती। इसके पीछे ऊंचे किरदार, सिद्धांत होते हैं। जंग शुरू हुई। शुरूआत में ही नाहर खान, मरदूद खान, ग़ैरत खान, असलम बेग अली जैसे चोटी के जरनैल मारे गए, जो वजीर ख़ान का दायां हाथ समझे जाते थे। गुरु जी ने चार-चार सिंघों के जत्थे भेजने शुरू किये, जो रणभूमि में अनेक आक्रमणकारियों को ख़त्म कर शहादत प्राप्त कर जाते। यहाँ प्यार व समर्पण की खातिर जान कुर्बान करने का जुनून था।

दोनों साहिबज़ादे और काफी सिंघ शहीद हो गए। गढ़ी के अंदर गुरु जी के साथ गिनती के सिंघ रह गए थे। जब भी भाई संगत सिंघ जी मैदान-ए-जंग में जाने के लिए कहते तो गुरु जी उन्हें रोक देते।

भाई दया सिंघ जी ने साथी सिंघों के साथ विचार-विमर्श किया कि ''ऐसे हालात में गुरु जी शहीद हो गए, फिर कौम को दोबारा कैसे खड़ा किया जाएगा? जुल्म का नाश कैसे होगा? हम पांच सिंघ मिलकर गुरु जी को गढ़ी छोड़ जाने के लिए कहेंगे!''

सिंघ गुरमता पारित कर गुरु जी के पास आए। भाई दया सिंघ जी ने गुरु जी से कहा, ''गुरु जी ! पंथ का हुक्म है कि आप गढ़ी को छोड़ जाओ। खालसा पंथ को आपके नेतृत्व की अभी काफी जरूरत है। कौम को सँभालो! जत्थेबंद करो!!''

गुरु जी ने न चाहते हुए भी पंथ का हुक्म सहर्ष माना। अपने साथ तीन सिंघों को जाने के लिए कहा और शेष रह गए सिंघों को हौसला व प्यार दिया। साहसी बन कर जंग फतह करने के लिए प्रेरित किया। बचपन के साथी भाई संगत सिंघ जी के साथ गुरु जी ने नज़रें मिलाईं और गले से लगाया। भाई संगत

सिंघ जी की आँखों में प्यार उमड़ आया और जुदाई के आँसू बह निकले। मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। गुरु जी ने भाई संगत सिंघ जी को आशीर्वाद दिया। अपने तन के वस्त्र और कलगी भाई संगत सिंघ जी को प्रदान कर दी, जो भाई संगत सिंघ जी के लिए बड़े सम्मान की बात थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भाई संगत सिंघ जी व अन्य सिंघों को 'गुरु फतह' बुला कर भाई मान सिंघ जी, भाई दया सिंघ जी और भाई धरम सिंघ जी सहित गढ़ी से बाहर आ गए। भाई संगत सिंघ जी की जत्थेदारी में सभी सिंघों ने गुरु जी के सही सलामत चले जाने की अरदास की। गुरु जी दुश्मनों के गढ़ में से दुश्मन को ललकारते हुए निकल गए। रात्रि का समय, दुश्मन सेना में पकड़ो, पकड़ो, पकड़ो की भगदड़ मच गई। अंधेरे में आपस में ही गुत्थमगुत्था हो उलझने लगे।

भाई संगत सिंघ जी ने गुरु जी के हुक्म की पालना की। भाई साहिब ने गुरु साहिब वाला जामा और कलगी सजा ली, ताकि मुगल सेना इन भ्रम में रहे कि सिक्खों के गुरु गढ़ी के अंदर ही मौजूद हैं तथा कोई भी गुरु जी का पीछा न कर सके। भाई संगत सिंघ जी के तन पर कलगी व गुरु साहिब के वस्त्र आदि देखकर मुगलों को गुरु जी के गढ़ी में उपस्थित होने का आभास हुआ। उन्होंने सिंघों पर एकदम हमला करने की हुंकार भरी।

'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' के जयकारे लगाते हुए सभी सिंघ एकदम दरवाज़ा खोल कर भूखे शेर की भांति मुग़लों पर टूट पड़े। मुगल जवानों की एक के बाद एक लाशें गिरने लगीं। सिंघों का हमला बहुत ज़बरदस्त था। भाई संगत सिंघ जी ललकारते हुए, गरजते हुए मुगल जवानों के सिर फोड़ रहे थे। रणभूमि खून से लाल हो गई। अपने खून का आखिरी कतरा तक बहाकर सिंघों ने शहादत प्राप्त की। भाई संगत सिंघ जी को शहीद कर मुगल अत्यंत प्रसन्न थे कि उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को खत्म कर दिया है। उनका यह भ्रम टूटते देर नहीं लगी जब उन्हें वास्तविकता का पता चला। वे खुद को विजेता घोषित कर करारी पराजय की लज्जा महसूस कर रहे थे।

कविता

दशमेश पिता के दुलारे

–डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक*

दशमेश के दुलारों की, गाथा महान है।
लिखी जो इनके लहू से, यह वो दास्तान है।
ख़ुद को धर्म के नाम पर, क़ुर्बान कर दिया।
मुग़लों के तख़्तो–ताज को, हैरान कर दिया।
साहिबज़ादों को ज़ालिमों ने,
डराया बहुत मग़र।
लालच दिए थे उनको, झुकाया बहुत मग़र।
वे कैसे झुकते? आख़िर वे 'गोबिंद' के लाल थे।
मुग़लों की सलतनत के लिए, दोनों ही काल थे।
उनको सज़ा–ए–मौत का, एलान जब हुआ।
यह सुनकर सारे आलम में, मातम–सा छा गया।
दादी माँ के पास आकर, बताई थी सारी बात।
दादी ने उनका जोश, बढ़ाया था सारी रात।
दूल्हे बनाकर प्यार से, उनको विदा किया।
जाने से पहले दादी ने, दोनों से यह कहा—
''देखो! हँसे न तुम पर यह जमीं–ए–सरहिंद!
पुरखों की आन–बान को, रखना सदा बुलंद!
'ज़ोरावर' ने ज़ोर से जल्लाद से कहा—
''पहले मेरी बारी है, मैं हूँ उम्र में बड़ा!''
यह सुनकर 'फतिह सिंघ' को,
अजब–सा जोश चढ़ा।
दोनों ने खालसे का, यह नारा बुलंद किया—
''बोले सो निहाल, सति श्री अकाल।''
दीवारों में चिने गए, जब दोनों नौनिहाल।
आँसू नहीं थे आँखों में, न मौत का मलाल।
दोनों के सिर के ऊपर तक, दीवार चढ़ गई।
मुग़लों के शासन की मानों, जड़ उखड़ गई।
वे पंथ की नींव को, और पुख़्ता कर गए।
छोटी उम्र में साके बड़े कर गए।
साहिबज़ादों की शहादत का, सानी नहीं कोई।
ऐसी मिसाल दुनिया में, यानी नहीं कोई।
दीवार में वे वैसे तो, रूपोश हो गए।
तारीख़ कह रही है कि, ख़ामोश हो गए।
आज भी वे ज़िन्दा हैं, साहिब–ए–ख़ुद्दार।
सरहिंद की दीवार को, सजदा है बार–बार!
क़ुर्बानियाँ न उनकी कोई, भूल पाएगा।
उनको 'फलक' ज़माना सदा, सर झुकाएगा।

*११, गुरु ज्ञान विहार, फेस–१, डुगरी, लुधियाना, फोन : ९६४६८–६३७३३

खबरनामा

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी फिर बने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान

श्री अमृतसर : ९ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के वार्षिक चुनाव के लिए हुए जनरल इजलास के दौरान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के एक बार फिर प्रधान चुन लिए गए। उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी बीबी जगीर कौर को बड़े अंतर के साथ हरा कर जीत हासिल की। एडवोकेट धामी लगातार दूसरी बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान बने हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में हुए जनरल इजलास के दौरान सदस्य स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके ने एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश किया, जिसकी ताईद एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका और ताईद मजीद स. नवतेज सिंघ काउणी ने की। इसी दौरान स. अमरीक सिंघ शाहपुर ने बीबी जगीर कौर का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश किया। हुए मतदान के बाद एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी विजेता रहे। कुल १४६ मतों में से एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी को १०४ और बीबी जगीर कौर को ४२ मत प्राप्त हुए।

जनरल इजलास के दौरान स. बलदेव सिंघ कायमपुर वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. अवतार सिंघ रिआ कनिष्ठ उपाध्यक्ष और भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) को महासचिव चुना गया। इसके अलावा ११ सदस्यीय कार्यकारिणी कमेटी में स. मोहन सिंघ बंगी, स. जरनैल सिंघ करतारपुर, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाला, स. गुरनाम सिंघ जस्सल, स. परमजीत सिंघ खालसा, स. शेर सिंघ मंडवाला, बाबा गुरप्रीत सिंघ रंधावा, स. भुपिंदर सिंघ असंध और स. मलकीत सिंघ चंगाल को लिया गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का प्रधान चुने जाने के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों का आज का चयन अति अहम है, क्योंकि इसमें केंद्र की भाजपा सरकार, आरएसएस, विशेष रूप से अल्पसंख्यक आयोग के चेयरमैन स. इकबाल सिंघ लालपुरा, पंजाब और हरियाणा सरकार के साथ-साथ कांग्रेस की पूरी ताकत एकजुटता के साथ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों पर दबाव डाल कर हर हाल में शिरोमणि अकाली दल के विरोध में उतरने के लिए कह रही थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों ने सिक्ख संस्था को तोड़ने वाली शक्तियों को मुँहतोड़ जवाब देते हुए बड़ी संख्या में शिरोमणि अकाली दल के उम्मीदवार को वोट डाल कर सफल बनाया है।

उन्होंने कहा कि इस विजय का श्रेय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उन सभी सदस्यों को जाता है, जिन्होंने विपरीत हालात के बावजूद भी दृढ़ रहने का संकल्प किया। एडवोकेट धामी ने प्रधान चुने जाने पर गुरु साहिब का शुक्राना करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों के साथ-साथ शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल और दल के समूचे नेताओं का धन्यवाद किया।

इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने कहा कि वे सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की परंपराओं और रिवायतों की रौशनी में सिक्ख पंथ के मसलों की पैरवी करने के साथ-साथ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध वाले गुरुद्वारा साहिबान तथा अन्य अदारों की सेवा-संभाल के लिए दिन-रात एक करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक कामकाज को और चुस्त-दुरुस्त करने के लिए समय अनुसारी तरजीहों के आधार पर आगे बढ़ा जायेगा। धर्म प्रचार, शिक्षा और लोक-कल्याण के कार्य निरंतर जारी रखे जाएंगे। सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यशील जत्थेबंदियों और सभा-सोसायटियों का सहयोग लेकर चला जायेगा।

एडवोकेट धामी तथा अन्य पदाधिकारियों ने गुरु साहिब का शुक्राना किया

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का प्रधान चुने जाने के बाद एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी सहित सभी पदाधिकारियों ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नत्मस्तक होकर गुरु साहिब का शुक्राना किया। उन्हें मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ ने गुरु-बख्शिश सिरोपाओ प्रदान किए। एडवोकेट धामी सहित सभी पदाधिकारी श्री अकाल तख़्त साहिब तथा यादगार शहीदां में भी गुरु साहिब का शुक्राना करने के लिए गए।

जनरल इजलास के दौरान सिंघ साहिबान रहे मौजूद

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान सहित अन्य पदाधिकारियों के चयन के लिए सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुए जनरल इजलास के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ और तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ मौजूद रहे। इजलास की आरंभता के समय तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने अरदास की और पवित्र हुकमनामा मुख्य ग्रंथी ज्ञानी जगतार सिंघ ने श्रवण करवाया। प्रधान सहित अन्य पदाधिकारियों को जनरल इजलास के दौरान सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ और जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने गुरु-बख्शिश सिरोपाओ देकर सम्मानित किया। एडवोकेट धामी ने उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद किया और जनरल इजलास की कार्यवाही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ ने चलाई।

जनरल इजलास के दौरान उपस्थित रहे सदस्य साहिबान

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान तथा अन्य पदाधिकारियों के चयन के समय इजलास में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के १४६ सदस्य उपस्थित थे। उपस्थित सदस्यों में प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल, स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके, बीबी जगीर कौर, स. दलजीत सिंघ भिंडर, बीबी हरजिंदर कौर, स. अमरीक सिंघ जनैतपुर, स. हरपाल सिंघ पाली, स. बलदेव सिंघ कायमपुर, स. हरभजन सिंघ मसाणां, स. भुपिंदर सिंघ असंध, स. अमीर सिंघ, स. बलदेव सिंघ खालसा, बीबी अमरजीत कौर, बाबा गुरमीत सिंघ त्रिलोकेवाला, स. जगसीर सिंघ मांगेआणा, स. गुरपाल सिंघ गोरा, बीबी किरनवीर कौर, स. नवतेज सिंघ काउणी, स. कौर सिंघ, बीबी प्रमिंदर कौर, स. सूबा सिंघ डब्बवाला, स. दरशन सिंघ (बराड़), स. प्रीतम सिंघ मलसीहां, स. दरशन सिंघ शेरखां, स. बलविंदर सिंघ भंमालंडा, स. सतपाल सिंघ तलवंडी भाई, बीबी जसविंदर कौर ज़ीरा, स. गुरमीत सिंघ बूह, स. सुखजीत सिंघ लोहगढ़, बीबी नरिंदर कौर, स. गुरमेल सिंघ संगतपुरा, स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे, स. तरसेम सिंघ रतिया, बीबी जसविंदर कौर, बीबी गुरिंदर कौर, स. शेर सिंघ मंडवाला, स. फुंमण सिंघ, स. मेजर सिंघ महिराज, बीबी जसपाल कौर, स. अमरीक सिंघ कोटशमीर, बीबी जोगिंदर कौर, स. मोहण सिंघ बंगी, स. सुरजीत सिंघ रायपुर, मास्टर मिट्ठू सिंघ काहनेके, बाबा बूटा सिंघ, स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, बीबी जसवीर कौर, स. इंदरमोहन सिंघ लखमीरवाला, बीबी जसपाल कौर, स. मलकीत सिंघ चंगाल, स. परमजीत सिंघ खालसा, स. बलदेव सिंघ चूंघा, भाई बलबीर सिंघ घुंनस, बीबी शरनजीत कौर, स. जैपाल सिंघ मंडियां, स. भुपिंदर सिंघ पहिलवान, स. हरदेव सिंघ रोगला, बीबी मलकीत कौर कमालपुर, स. निरमल सिंघ हरिआओ, स. कुलदीप सिंघ नस्सूपुर, स. सतविंदर सिंघ टौहड़ा, स. जरनैल सिंघ, स. सविंदर सिंघ (सभरवाल), स. जसमेल सिंघ लाछड्डू, बीबी कुलदीप कौर टौहड़ा, स. निरमैल सिंघ जौलां, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. गुरप्रीत सिंघ, स. रणधीर सिंघ (चीमा), स. अवतार सिंघ रिआ, स. रविंदर सिंघ ख़ालसा, स. दविंदर सिंघ खट्टड़ा, स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, स. चरन सिंघ आलमगीर, स. हरपाल सिंघ जल्ला, स. हरप्रीत सिंघ गरचा, स. जगजीत सिंघ तलवंडी, स. गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, स. केवल सिंघ बादल, स. बलविंदर सिंघ बैंस, बीबी रजिंदर कौर, स. रणजीत सिंघ मंगली , स. सरबंस सिंघ माणकी, बीबी हरजिंदर कौर, स. महिंदर सिंघ हुसैनपुरा, स. गुरबख़श सिंघ ख़ालसा, स. सुखदेव सिंघ भौर, स. बलदेव सिंघ कल्याण, स. परमजीत सिंघ रायपुर, बीबी दविंदर कौर (कालड़ा), स. कुलवंत सिंघ मंनण, स. रणजीत सिंघ (काहलों), बीबी गुरमीत कौर, स. सरवण सिंघ कुलार, बीबी गुरप्रीत कौर, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. बलजीत सिंघ जलालउसमा, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. बलविंदर सिंघ वेईंपूईं, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. खुशविंदर सिंघ

(भाटिया), बीबी हरजिंदर कौर, भाई मनजीत सिंघ, स. निरमल सिंघ नौशहिरा ढाला, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. गुरिंदरपाल सिंघ रणीके, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, बीबी किरनजोत कौर, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड, बीबी बलविंदर कौर लोपोके, स. अमरीक सिंघ विछोआ, स. जोध सिंघ समरा, बीबी सवरन कौर तेड़ा, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, स. बिकरमजीत सिंघ कोटला, स. भगवंत सिंघ सिआलका, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाला, स. गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, स. गुरनाम सिंघ जस्सल, स. अमरीक सिंघ शाहपुर, बीबी जोगिंदर कौर, बीबी जसवीर कौर जफ्फरवाल, स. रविंदर सिंघ चक्क, स. तारा सिंघ तलवंडी, स. हरजिंदर सिंघ धामी, स. सुरिंदर सिंघ ठेकेदार, स. जंग बहादर सिंघ राय, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), स. अजमेर सिंघ खेड़ा, स. चरनजीत सिंघ कालेवाल, बीबी परमजीत कौर लांडरां, स. रघूजीत सिंघ (विर्क), स. करनैल सिंघ पंजोली, भाई राम सिंघ, स. जगतार सिंघ रोडे, स. सुरजीत सिंघ (कंग), स. हरभजन सिंघ चीमा, स. चरनजीत सिंघ जस्सोवाल, स. सुखमीत सिंघ कादियाँ, स. हरमनजीत सिंघ, स. गुरमिंदर सिंघ मठारू, बीबी सुखविंदर कौर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), अतिरिक्त सचिव स. परमजीत सिंघ सरोआ, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. निरवैल सिंघ आदि उपस्थित थे।

एडवोकेट धामी सन् १९९६ से चले आ रहे हैं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लगातार दूसरी बार प्रधान चुने गए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लंबे अरसे से सिक्ख संस्था के साथ जुड़े हुए हैं। सन् १९५६ में जन्मे एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी बी.ए., एलएलबी उत्तीर्ण हैं और चार दशक से वकालत के पेशे के साथ जुड़े हुए हैं। वे सन् १९९६ में पहली बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य चुने गए और तब से लेकर आज तक लगातार सदस्य रहे। वे धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भी रहे और कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य भी रहे। एडवोकेट धामी सन् २०१९ में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव चुने गए, जिसके पश्चात् उन्होंने सन् २०२० में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव के प्रशासनिक पद पर सेवा निभाई। वे सिक्ख सरोकारों की गहरी पकड़ रखते हैं और ईमानदार नेता के तौर पर जाने जाते हैं। वे सिक्ख संघर्ष के योद्धाओं के मामलों की पैरवी भी करते रहे हैं। एडवोकेट धामी के मुख्य सचिव एवं प्रधान होते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग और शहीदी साका श्री पंजा साहिब की शताब्दियां मनाई गई हैं।

छोटे साहिबज़ादों व माता गुजरी जी का शहीदी-स्थान गुरुद्वारा श्री फ़तहिगढ़ साहिब